चन्दामामा
सितम्बर १९६६
75 P

ग्राहकों को एक ज़रूरी सूचना!

ग्राहकों को पत्र-व्यवहार में अपनी ग्राहक-संख्या का उल्लेख अवश्य करना चाहिए। जिन पत्रों में ग्राहक-संख्या का उल्लेख न होगा, उन पर कोई ध्यान नहीं दिया जा सकेगा। पता बदल जाने पर तुरन्त नये पते की सूचना देनी चाहिए। यदि प्रति न मिले तो १० वीं तारीख से पहले ही सूचित कर देना चाहिए। बाद में आनेवाली शिकायतों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा।

व्यवस्थापक

चन्दामामा प्रकाशन

वडपलनी :: मद्रास-२६

Introducing
'Kashmir' TOOTH PASTE
'Kashmir'
New
Teeth Cleaning Unit
'Kashmir'
TOOTH PASTE
TOOTH POWDER
and
TOOTH BRUSH
by
THE NATIONAL TRADING CO.
Manufacturers of
KASHMIR SNOW BEAUTY AIDS
BOMBAY-2. MADRAS-32.

अरे,
इसे तो सर्दी
लग गयी है!

बस हल्के हल्के वेपोरब मलिये इसकी गरमाहट से मुन्ने को फ़ौरन आराम मिलता है... आसानी से साँस लेने लगता है और रात भर चैन की नींद सोता है।

आप ही मुन्ने को आराम दे सकती हैं। जब उसे सर्दी लगी हो बस आप ममताभरे हाथों से विक्स वेपोरब छाती, गले, नाक और पीठ पर मलिये। देखते ही देखते भारीपन दूर होने लगता है और आपका मुन्ना फिर आसानी से साँस लेने लगता है क्यों कि विक्स वेपोरब की आरामदायक दवाइयां केवल सात सेकण्डों में ही सर्दी से जकड़े भागों पर असर करने लगती हैं।

अब मुन्ने को आराम से बिस्तर पर सुला दीजिए। जब कि मुन्ना चैन से सोता है, वेपोरब अपना असर रात भर करता रहता है। सुबह तक सर्दी जुकाम दूर हो जाता है और आपका प्यारा लाडला खुश और तन्दुरुस्त उठता है।

विक्स वेपोरब सर्दी जुकाम के लिए आज रात ही मलिये

दिलीप और उसके साथी मछली पकड़ने गये
वाह ! आज स्कूल बंद !
तो हम क्या करेंगे, दिलीप ?
मछली पकड़ने चलें !
मेरे पास धागा भी है और कँटिया भी ।
आखिरी केंचुआ भी खतम, दिलीप। और अभी तक हमें कुछ भी हाथ नहीं आया ।
तो हम कुछ केंचुआ ढूँढ निकालें ।
लेकिन केंचुए तो घास के भीतर इस तरह छिपे रहते हैं कि...
और अब अंधेरा होता जा रहा है ।
मेरे 'एवरेडी' टॉर्च से हम लोग केंचुआ ढूँढ निकालेंगे ।
देखो, मुझे एक मिल गया — यहाँ दो, तीन !
अब मछली पकड़ने की मेरी बारी है ।
देखो, इसे कहते हैं तकदीर — फिर 'एवरेडी' टॉर्च ने भी तो हमारी मदद की ।

पूरा पता लिखने से चिट्ठी जल्दी पहुंचती है

अधूरा पता
लिखने से
चिट्ठी देर से
पहुंचती है

श्री ए. पी. मल्होत्रा
एडवोकेट
२०-सी, ग्रीन पार्क
नई दिल्ली-१६

श्री ए. पी. मल्होत्रा
एडवोकेट
नई दिल्ली

DA-66/284

हमें बेहतर
सेवा का
अवसर दीजिये

डाक व तार विभाग

चन्दामामा
संचालक: चक्रपाणी
रामायण भारत के प्राचीन गौरव ग्रन्थों में है। हिन्दुओं के धार्मिक ग्रन्थों में इसका मुख्य स्थान है। इसका घर घर पारायण होता है।
हम इसे कई वर्षों से "चन्दामामा" में धारावाहिक रूप से देते आये हैं। कथन शैली में भले ही हमने परिवर्तन किया हो, पर कथानक हमने कभी न बदला। इस अंक के साथ रामायण की सम्पूर्ण कथा समाप्त हो रही है।
वर्ष: १८ सितम्बर १९६६ अंक: १
CHITRA

भारत का इतिहास

१७४७ में नादिरशाह की हत्या कर दी गई। उसके सेनापतियों में से एक अहमदशा अब्दाली अफ़गानिस्तान का स्वतन्त्र शासक बन गया। यह नादिरशाह के साथ भारत आया था। उसने स्वयं अपनी आँखों मुगल साम्राज्य की दुरवस्था देखी थी। अफ़गानिस्तान की गद्दी पर कुछ स्थिर हो जाने के बाद, उसने भारत पर आक्रमण किया। १७४५-१७६७ के बीच उसने कई आक्रमण किये।

इन आक्रमणों के पीछे सिर्फ लूट-खसोट नहीं थी। वह इस प्रकार मुगलों का अधिकार समाप्त करके, अफ़गानों के आधिपत्य की पुनः स्थापना करना चाहता था।

इन आक्रमणों का भारत के इतिहास में काफ़ी महत्व है। इन आक्रमणों का एक और उद्देश्य भी था और देशों में विजय प्राप्त करने से अपने ही देश में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ सकती थी। भारत से लूटे हुए धन से, वह अपनी सेना को वेतन और सेनापतियों को ईनाम दे सकता था।

१७४८ अहमद शा ने पंजाब पर जो हमला किया, उसके माफ़िक न रहा। पंजाब के गवर्नर ने उसे हरा दिया। परन्तु दो साल बाद अहमद शा ने फिर पंजाब पर हमला किया और इस बार वह जीत गया। पंजाब के गवर्नर को दिल्ली से कोई मदद न मिली। १७५१ के अन्त में अहमद शा ने भारत पर एक और हमला किया, काश्मीर को जीता। सिरहिन्द तक का ईलाका जो मुगल साम्राज्य का पश्चिमी प्रान्त था, उसने मुगल सम्राट से ले लिया।

१७५६ में पंजाब में अराजकता फैल गई और वह प्रान्त मुगल प्रधान मन्त्री इमदुल मुल्क ने हथिया लिया। अहमद शा अब्दाली ने उस साल नवम्बर में चौथी बार आक्रमण किया। जनवरी २३, १७५७ को वह दिल्ली तक पहुँचा। उसने दिल्ली को खूब लूटा, मुगल बादशाह (आलंगीर द्वितीय) ने उसको पंजाब, काश्मीर, सिन्धु, सिरहिन्द के जिले देकर उससे सन्धि कर ली। बहुत-सा धन और कैदी लेकर अब्दाली १७५७ एप्रिल में अपने देश वापिस चला गया।

१७५७ मई से १७५८ एप्रिल तक अब्दाली का लड़का तीमूर शा लाहौर में वायसराय रहा। उसके शासन में अराजकता और बढ़ गई। जब एक सिख सरदार पर अत्याचार किया गया, तो सारे सिख समाज़ ने विद्रोह कर दिया। जलन्धर के गवर्नर आदीन बेग खान ने अफ़गानों के खिलाफ़ बगावत की और मराठाओं की सहायता माँगी। रघुनाथ राव के नेतृत्व में एक बड़ी सेना ने १७५८ एप्रिल में पंजाब पर हमला किया। लाहौर को ले लिया और अफ़गानों को वहाँ से भगा दिया। परन्तु

लाहौर मराठाओं के आधीन छः मास ही रहा। १७५९ ओक्टोबर में, अब्दाली ने पाँचवी बार भारत देश पर आक्रमण किया और पंजाब को अपने आधीन कर लिया।

भारत देश में अधिकार प्राप्त करने के हेतु अफ़गानों और मराठाओं में तनातनी बढ़ती गई। १५ जनवरी १७६१ में पानीपत के पास दोनों में युद्ध हुआ। १७६२ में अब्दाली वापिस चला गया। फिर सिखों ने लाहौर के गवर्नर की हत्या कर दी। १७६५ मार्च में अब्दाली फिर लाहौर आया। वहाँ दो सप्ताह रहा और जब उसके देश में परिस्थिति विपरीत हो गई, तो वह वापिस चला गया। १७६७ में वह फिर सिखों का दमन करने आया। पर वह अपने इस काम में असफ़ल रहा। पंजाब में, लाहौर और कई जिले सिखों के आधीन आ गये।

भारत के इतिहास में अब्दाली के आक्रमणों का क्या महत्व है? इनके कारण मुगलों के ह्रास की गति और बढ़ गई। मराठाओं के साम्राज्य विस्तार में इनसे बाधा पहुँची। सिखों के बल को परोक्ष रुप से उन्हें बढ़ाय'। अफ़गानों के आक्रमण के कारण ईस्ट इन्डिया कम्पनी भयभीत हो उठी। अब्दाली के मृत्यु के बाद भी उनका यह भय बना रहा।

जैसे जैसे दिल्ली की सल्तनत ढ़ीली पड़ती गई वैसे वैसे प्रान्तों के राजप्रतिनिधि वस्तुतः स्वतन्त्र होते गये, यद्यपि वे दिखाने के लिए दिल्ली सल्तनत के आधीन थे। इस प्रकार कुछ नई मुसलमान रियासतें पैदा हुईं।

नेहरू की कथा

[२६]

अगले दिन साइमन कमिशन के आने के दिन, एक जबर्दस्त हड़ताल होनेवाली थी। लाठी चार्ज के बारे में अखबारों में पढ़कर अलहाबाद में कहीं उनके पिता चिन्तित न हो उठें यह सोच नेहरू जी ने घर फोन किया और बताया कि वे ठीक थे और फिक्र करने की कोई जरूरत न थी। परन्तु मोतीलाल चिन्तित हो उठे। वे तुरत आधी रात के समय १४६ मील, कार में, सफर करके ५ घंटों में लखनऊ पहुँचे।

मोतीलाल जब पहुँचे, तो जवाहरलाल आदि, जलूस में रेल्वे स्टेशन पहुँचने की तैयारी में थे। पिछले दिन की घटनाओं के कारण लखनऊ की जनता इतनी उत्तेजित हो उठी थी कि सूर्योदय से पहिले ही, वे झुन्डों में, गलियों में आ खड़े हुए थे। सभी ओर से छोटे छोटे जलूस निकलने लगे। कान्ग्रेस के दफ्तर से एक बड़ा जलूस निकला। उस जलूस में, चार चार की कतार में हज़ारों लोग थे। उनमें जवाहरलाल नेहरू भी थे।

रेल्वे स्टेशन के सामने, आधा मील लम्बा चौड़ा एक बड़ा मैदान था। पोलीस ने जलूस को रोका। लोगों को एक ओर खड़ा कर दिया। मैदान, मामूली पोलीस सैनिक और घुड़सवारों से भरा था। कई, जो यह सब देखने आये थे मैदान की भीड़ में आ गये और यह भीड़ बढ़ती जाती थी।

इतने में घुड़सवार पोलीस जो कोई सामने आता, अन्धाधुन्ध उसे पीटते।

सिवाय इसके कि जहाँ वे खड़े थे, वहाँ से हिलना नहीं था, जवाहर और कुछ न सोच सके। चोटों के कारण, उनको ठीक तरह दिखाई नहीं दे रहा था। उन्हें गुस्सा आया और पोलीस पर प्रत्याक्रमण करने की भी इच्छा हुई। सामने के पोलीस के घुड़सवार को घोड़े से घसीटकर उस पर खुद सवार होना भी उन्हें बड़ा आसान-सा लगा। परन्तु नियन्त्रण के कारण वे चुप खड़े रहे।

वे सोच रहे थे कि यदि कान्ग्रेसियों ने बदला लिया, तो गोलीबारी और लोग और अधिक संख्या में मारे जायेंगे।

लाठी चार्ज के कारण, सत्याग्रह भी तितर बितर तो नहीं हुए, पर एक तरफ हटने लगे। इस कारण जवाहर और पोलीस के पास आ गये। यह देख कि उनको पोलीसवाले यूँ ही पीट रहे थे, उनके मित्र यकायक आये और उनको उठाकर ले गये।

जलूसी, सौ फीट पीछे हट गये और फिर खड़े हो गये। पोलीस भी पीछे हटी, ५० फीट दूरी पर कतार में खड़ी हो गई। इस बीच साइमन कमीशन के सदस्य, आधे

घोड़ों से कुचलते जलूसियों पर आये। देखते देखते सारा मैदान युद्ध क्षेत्र-सा हो गया। कई घोड़ों से इस तरह कुचल दिये गये कि वे दर्द के कारण फिर न उठ सके।

यद्यपि पोलीस के घोड़े तेज़ी से उन पर आ रहे थे, तो भी लोग भागे दौड़े नहीं। जब घोड़े पास आये, तो वे पिछले पैरों पर खड़े हो गये और आगे के पैरों से वालन्टियरों के सिर पर मारने लगे। फिर मामूली पोलीस भी वालन्टियरों को मारने लगी।

मील पीछे दूर स्टेशन से चुपके से खिसक गये। परन्तु वे काले झण्डे और हड़ताल से न बच सके।

फिर जलूस कान्ग्रेस के दफ्तर वापिस चला गया और जवाहर अपने पिता को देखने गये।

जब जोश खतम हो गया, तब जवाहर को घावों का दर्द सताने लगा। शरीर का अंग अंग दर्द कर रहा था। सौभाग्य से किसी भी मर्मस्थल पर उनको चोट न लगी थी। उनके पास ही गोविन्द बल्लभ पन्त थे। वे भारी भरकम शरीर के थे। उनको जबर्दस्त चोट लगी थी। उनके कारण कई दिन तकलीफ़ होती रही। कई दिनों तक वे पीठ सीधी न कर पाये। कोई भी काम चुस्ती से न कर पाये।

जवाहर की स्मृति में लाठी चार्ज करनेवाले पोलीसवालों के मुख अंकित-से हो गये। जबर्दस्त चोट करनेवाले भारतीय सैनिक न थे, परन्तु यूरोपियन सार्जेन्ट थे। उनके मुँह क्रूरता, द्वेष, रक्त पिपासा उन्माद के कारण विकृत हो रहे थे। जो घायल हुए थे, पोलीसवालों को उनके हुलिये भी बिगड़े हुए लगे होंगे। उन्होंने

बदला तो नहीं लिया था, पर उनके मन में द्वेष अग्नि भभक रही थी। परन्तु दोनों पक्षों में कोई अलग शत्रुता न थी। उस समय कोई अदृश्य शक्ति कान्ग्रेस के वालन्टियरों को प्रेरित करती-सी लगती थी।

"यह सब क्या है! इसका क्या अन्त है!" ये प्रश्न तब नहीं उठे। बाद में उठे।

१९२४ सारा वर्ष जवाहर देश का दौरा करते रहे। उन्होंने पूर्ण स्वतन्त्रता की माँग की। साम्यवादी विचारों को जनता के सामने रखा और बताया कि बिना पूर्ण स्वतन्त्रता के सामाजिक सुधार असम्भव थे। उनको लगा कि इस प्रकार के विचारों के प्रचार की आवश्यकता कान्ग्रेसियों को बहुत थी। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय आन्दोलन की रीढ़ से कार्यकर्ता संकुचित राष्ट्रीयता से प्रभावित थे। वे हमेशा पीछे की ओर देखते थे। वे सोचते थे कि भारतीय संस्कृति पराधीनता के कारण पतित हो गई थी। उनका ख्याल था कि राष्ट्रीय आन्दोलन के कार्यकर्त्ताओं को भविष्य के बारे में सोचना चाहिए था।

ऐसी बात नहीं कि जवाहर से पहिले देश में सोशलिस्ट विचार न थे, इससे पहिले भी देश में वे प्रचलित थे। परन्तु सोवियत क्रान्ति के कारण रुस में जो पंच वर्ष प्राणलिका बनी और उसके परिणाम स्वरूप जो राष्ट्रीय उन्नति हुई, इससे जिस प्रकार अमेरिका और यूरोप में लोग प्रभावित हुए, हमारे देश में भी हुए। जवाहर को सोशलिस्ट के रुप में अधिक प्रमुखता यदि मिली, तो इसका कारण उनका कान्ग्रेसी नेताओं में अग्रणी होना ही था।
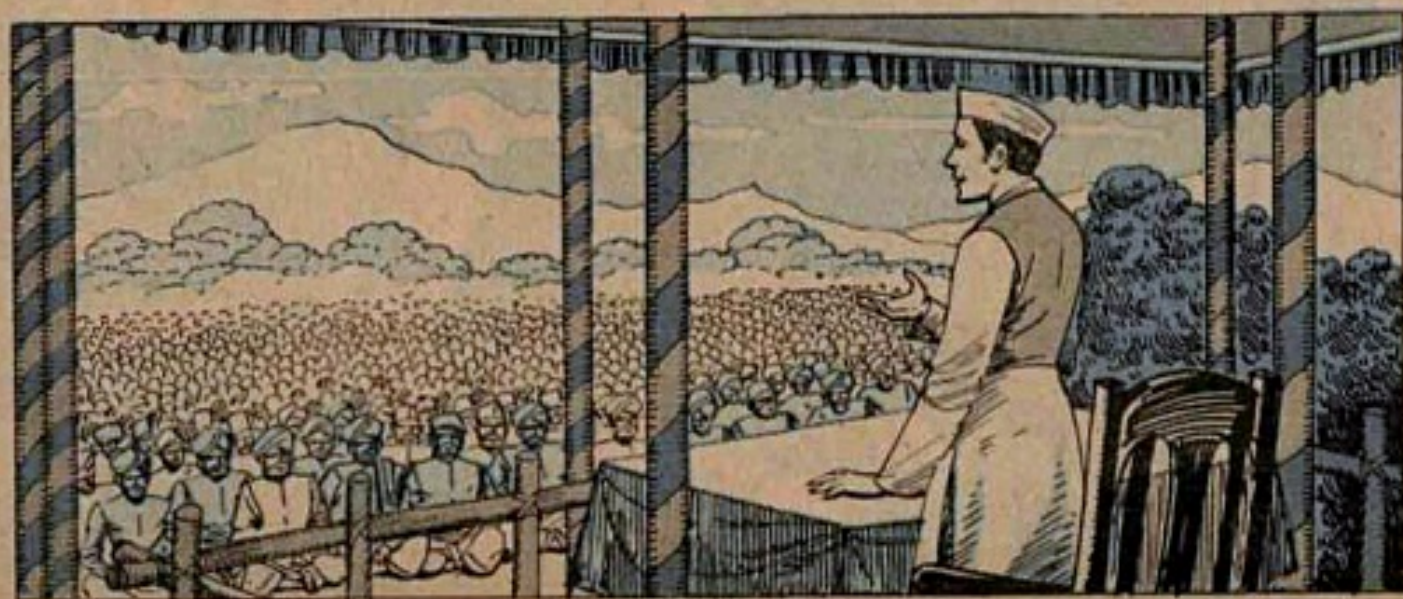
पाताल दुर्ग

[४]

[रात के समय कदम्ब की राजधानी में एक महाकाय राक्षस आया। राजकुमारी कान्तिसेना को वह उठाकर भागने लगा। पहरेदार उस पर बाण और भाले फेंकने लगे। राजा उग्रसेन की आज्ञा पर कुछ घुड़सवार उसका पीछा करने लगे और कुछ उस पर अग्नि बाण छोड़ने लगे। बाद में—]

राजमहल में हुए शोर के कारण सारा शहर जाग उठा। लोगों ने सोचा कि किसी शत्रु ने उन पर हमला कर दिया था। उनमें से कुछ नगर के द्वार की ओर भागे।

इस बीच सैनिकों के छोड़े हुए बाण निशाने पर न लग कर, शहर के घरों पर गिरे और जहाँ जहाँ वे गिरे, वहाँ वहाँ छोटी मोटी आग भभक उठी। लोगों में हो हल्ला मचा और वे अपने घरों की रक्षा करने के लिए भागे।

राजमहल की छत पर खड़े होकर राजा उग्रसेन यह सब देख रहा था। उसने मन्त्री की ओर मुड़कर गुस्से में कहा—"मन्त्री, यह है हमारे लोगों की राजभक्ति! आपत्ति में भी सबको अपनी अपनी पड़ी

है। हमारी रक्षा के लिए एक नहीं आगे बढ़ रहा है। यदि शत्रु राजा ने हम पर हमला किया, तो इनमें से एक भी किले की रक्षा के लिए नहीं आयेगा।"

"महाराज! राज्य की रक्षा के लिए वेतन पर रखे हुए, हमारे सैनिक हैं न? इन डरपोक लोगों से भला क्या होगा? उनको मरने दीजिये।" कहकर, मन्त्री ने उन सैनिकों की ओर राजा का ध्यान आकृष्ट किया, जो अग्नि बाण छोड़ रहे थे और कहा—"जो बाण और भाले हमारे सैनिक, राक्षस पर फेंक रहे हैं, उनसे राजकुमारी की हानि हो सकती है। इस बारे में सैनिकों को सावधान करना आवश्यक है।"

उग्रसेन ने कहा—"हाँ....हाँ...." उसने सिर हिलाया और जल्दी जल्दी छत पर से उतरने लगा। "मन्त्री, मेरे वापिस आने तक नगर की रक्षा की जिम्मेवारी तुम पर है। शतभानु कुछ भी कर सकता है। उन दूतों का क्या हुआ, जिनको हमने उनके पास भेजा था?"

इतने में एक सैनिक ने एक घोड़ा लाकर सीढ़ियों के पास खड़ा किया। उग्रसेन उस पर तुरत सवार हो गया। कुछ घुड़ सवारों के साथ, वह नगर द्वार पार करके, जंगल की ओर जाने लगा। मन्त्री कुछ देर उनकी ओर देखता रहा। फिर किले की बुर्ज़ की ओर जाते हुए उसने सोचा कि यह उग्रसेन अधिक समय तक अपना राज्य न रख सकेगा।

कदम्ब नगर के पूर्व के जंगल में जहाँ देखो, वहाँ मशाल लिये सैनिक थे। "मशालों की रोशनी में राक्षस उनको आसानी से पहिचान सकता था। जो उसे खोज रहे थे उस हालत में उन्हें

राक्षस कैसे मिलेगा !" मन्त्री यह सोचकर अचरज करने लगा।

जंगल में धूमक और सोमक ने भी यही सोचा। वे कदम्ब राजा की मूर्खता पर हँसे। ज्योंहि सैनिक उनकी ओर आये त्योंहि वे घोड़ों से उतरकर पेड़ों पर चढ़ गये और घोड़ों को पेड़ों के पीछे छुपा दिया। कदम्ब राज्य के कुछ सैनिक उन पेड़ों के नीचे आकर बातें करने लगे। उनकी बातों से धूमक और सोमक जान गये कि राजकुमारी अपहृत कर ली गयी थी और उग्रसेन स्वयं जंगल में आया हुआ था।

"उस दुष्ट को मारने के लिए यह अच्छा मौका है।" सोमक ने कहा।

"जल्दी न करो सोमक। अगर हम सैनिकों की बरदी में होते, तो वह काम आसान था। अब हम जिन कपड़ों में हैं, अगर उनमें देखे गये, तो हमारे मरने की ही नौबत आ सकती है।" धूमक ने कहा। कदम्ब राज्य के सैनिक पेड़ के नीचे से चले गये।

"सोमक, उजाला होने से पहिले हमारा पेड़ो से उतरकर, अपने गाँव चले जाना अच्छा है। जब तक हम अपने परिवारों को, इस राज्य की सीमा से बाहर नहीं कर देते तब तक हम कुछ भी नहीं कर सकते।" धूमक ने कहा। सोमक ने कोई जवाब न दिया। दोनों पेड़ों पर से उतरने लगे। इतने में पास के बढ़ के पेड़ के पीछे से एक काली भयंकर आकृति निकली और पास के गुफाओं की ओर चलने लगी। उसके कन्धे पर कोई स्त्री बेहोश पड़ी हुई थी।

धूमक ने सोमक का कन्धा पकड़कर रोका। गुफा की ओर जाती हुई भयंकर

आकृति को उसे दिखाते हुए कहा—"वह देखो राक्षस। उसके कन्धे पर राजकुमारी ही है। देखते हो, उसके हीरे मोती के गहने कैसे इस अन्धेरे में चमक रहे हैं।" सोमक यह दृश्य देखकर चकित रह गया। राक्षस ज्योंहि एक गुफा के पास आया, त्योंहि अन्दर से एक गम्भीर स्वर में सुनाई दिया। "कौन है? वापिस चले जाओ।"

"अरे पगले, क्यों यूँ जोर से चिल्ला रहा है? मैंने कसम खा रखी है कि आज रात किसी को नहीं मारूँगा। सीधे सादे गुफा से बाहर चले आ और चुपचाप भाग जा।" राक्षस ने कहा।

"तुम कोई राक्षस से मालूम होते हो। मैंने एक महावीर को, चिकित्सा करके, होश में लाया है। बहुत न बात करो। बिना चूँ चाँ किये यहाँ से चले जाओ।" गुफा में से जवाब आया।

यह जवाब सुनते ही राक्षस क्रुद्ध हो उठा। उसने गरजते हुए एक कदम आगे रखा। "अरे मनुष्य! तुम क्या कह रहे हो? मैं राक्षस हूँ। कुम्भीर हूँ।"

"मैं मान्त्रिक हूँ। मान्त्रिक काल शम्बर।" गुफा के अन्दर से आवाज़ सुनायी दी। तुरत चमकता हुआ शम्बर का मन्त्रदण्ड साँप की तरह फुँकारता बाहर आया और वह कुम्भीर के सिर पर लगा।

उतना बलवान कुम्भीर मन्त्रदण्ड की चोट लगते ही, नीचे गिर गया। परन्तु उसने राजकुमारी कान्तिसेना को चोट न लगने दी। वह ऐसे उठी, जैसे नीन्द से उठ रही हो। उसने चारों ओर देखा। वह ऊँची बढ़ी घास की कालीन पर लेटी हुई थी। पास में ही राक्षस हाथ में सिर

CHITRA
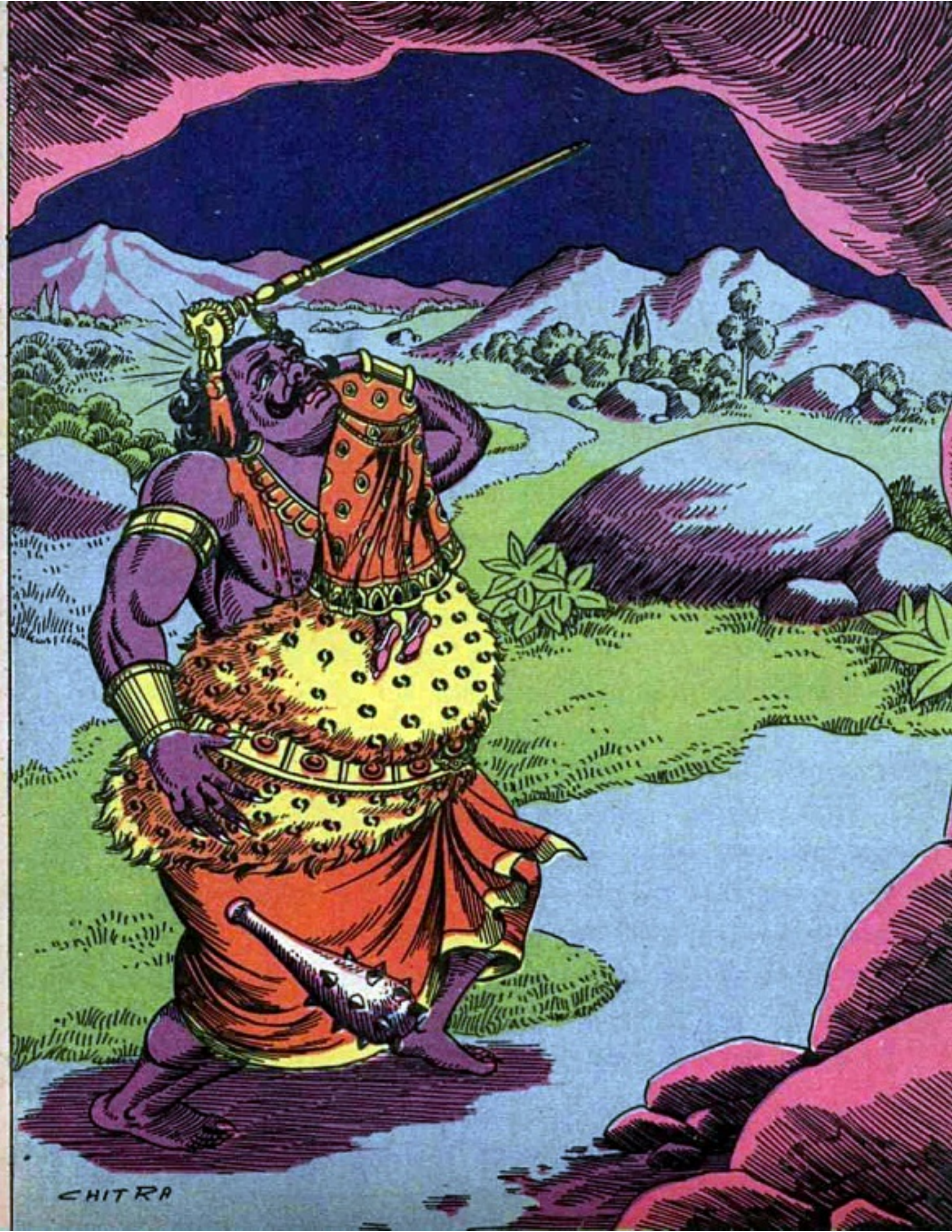
रखकर कराह रहा था। दान्त पीस रहा था। उसके सिर पर जो सींग थे, उसमें से एक मन्त्रदण्ड की चोट से टूट गया था। वहाँ एक घाव हो गया था और उसमें से लगातार खून निकल रहा था।

महा भयंकर राक्षस को उस हालत में देखकर, कान्तिसेना का डर जाता रहा और उसे उस पर दया आ गई। उसने उठकर कहा—"अरे राक्षस, अगर मुझे खाना ही था, तो इतनी दूर क्यों मुझे उठाकर लाये? तुम्हें किसने घायल किया है? क्या मेरे पिता ने ही? वह बड़े शूर हैं, पर जो शरण में आते हैं, उनका कुछ नहीं बिगाड़ते। मै उनको मनवाकर तुम्हें बचवा दूँगा।"

राजकुमारी की बात सुनकर, उस दर्द में भी राक्षस बिना हँसे न रुक सका। उसे उसकी बातों का लहजा भी भाया।

कुम्भीर उस जगह से उठा और पास की झाड़ियों के पास गया। पत्तियाँ तोड़ कर उन्हें पीसकर, अपने घाव पर लगाया और फिर कान्तिसेना के पास वापिस चला आया। तब कान्तिसेना गुफा की ओर देख रही थी। वह डर के मारे काँप रही थी। "इस गुफा में कौन बातें कर रहा है? वह क्या कोई महाराक्षस है? तुम्हारे सेवक हैं? कौन है?" कान्तिसेना ने पूछा।

कुम्भीर ने गुफा की ओर क्रोध भरी दृष्टि से देखा। "उसमें मेरे सेवक नहीं, शत्रु हैं। मेरे सिर पर चोट इस शत्रु ने ही लगाई है। वह कोई मान्त्रिक है। बड़ा बलवान मालूम होता है। अगर मैं उसके पीछे लगा, तो मेरा काम खराब हो सकता है। इसलिए अब मैं उसे छोड़ रहा हूँ।"

"तुम किस काम पर आये हो? मुझको चोर की तरह घर से उठाने के लिए, तुम भी क्या वीर हो.....छी....." कान्तिसेना ने उठकर खड़े होते हुए कहा।

कुम्भीर यह सुनकर स्तब्ध खड़ा हो गया। लज्जा से उसका सिर झुक गया। आँखें छलक आईं। उसने कान्तिसेना के सामने हाथ मलते हुए कहा—"कान्तिसेना मुझ पर इतनी घृणा न करो। मैं स्वतन्त्र नहीं हूँ। मै एक अति क्रूर महा शक्तिमान का नौकर मात्र हूँ। उस महापापी ने मुझे तुम्हें उठा लाने के लिए भेजा है। उस काम को यदि मैं नहीं करता, तो मुझसे भी अधिक क्रूर निर्भय राक्षस वह कर देता। उसकी आज्ञा का धिक्करण नहीं हो सकता। परन्तु मैं तुझे, एक न एक दिन, तुम्हारे घर छोड़ आऊँगा। भले ही यह करते हुए मेरे प्राण चले जायें।"

"वह काम अभी क्यों नहीं करते हो?" कान्तिसेना ने पूछा। उसे राक्षस पर दया आ रही थी।

"ऐसा करने से हम दोनों पर ही आपत्ति आ सकती है। जहाँ तुम्हें मेरे मालिक ने लाने के लिए कहा है, वहाँ तुम्हें मुझे ले जाना ही पड़ेगा। तुम डरो मत। मैं तुम्हें उसके पंजे से ज़रूर छुड़ाऊँगा और इस संसार में तुम जिससे शादी करना चाहोगी, उससे तुम्हारी शादी करवाऊँगा। समझे।" कुम्भीर ने कहा।

कान्तिसेना कुछ भी न कह सकी। कुम्भीर की भलमनसाहत पर उसे कुछ तो विश्वास हुआ पर वह क्या कह रहा था, कुछ भी न समझ सकी। अब मुझे क्या करना चाहिए? भाग जाने का प्रयत्न व्यर्थ था! राक्षस की आँखों में धूल झोंकना सम्भव न था। न मदद के लिए चिल्लाने से ही

कोई फायदा था। कुम्भीर क्रुद्ध हो, उसका गला घोंट सकता था। उससे, मीठी मीठी बातें करने से ही उसका काम बन सकता था—उसने सोचा।

कान्तिसेना यूँ सोच रही थी कि गुफा के सामने उसे मशाल की रोशनी दिखाई दी। एक विकृत आकृति उसे दिखाई दी। उसके बड़े बड़े बाल थे। सिर से लेकर, ऐंड़ी तक उसने काषाय वस्त्र पहिन रखे थे और हाथ में एक मन्त्रदण्ड था।

"राक्षस अधम! अब भी तुम यहीं खड़े हो? क्या हल्ला कर हो यहाँ? क्या तुम अपने से बात कर रहे हो? या कोई तुम्हारा दोस्त तुम्हारे साथ है?" मान्त्रिक ने पूछा।

कुम्भीर, कान्तिसेना को छुपाकर खड़ा हो गया। आँखें लाल करके दान्त पीसते हुए उसने कहा—"अरे, मनुष्य कहीं के। मैंने कसम खायी है कि आज किसी को नहीं मारूँगा। फिर भी अब तुम्हें मैं जीता जी नहीं छोड़ूँगा।" वह गरजता आगे बढ़ा।

मान्त्रिक ने अट्टहास करते हुए मन्त्रदण्ड उठाकर कहा—"अरे, राक्षस कीड़े को इतना गुस्सा कहाँ से आ गया?" कहकर वह मन्त्रदण्ड छोड़ने ही वाला था कि उसके हाथ पर बाण लगा। इतने में पेड़ों के पीछे से इतना हो हल्ला सुनाई दिया कि सारा जंगल गूँज उठा। मान्त्रिक ने अपने हाथ की मशाल नीचे फेंक दी। वह गुफा के अन्दर चला गया। कुम्भीर राजकुमारी को कन्धे पर रख, एक और गुफा में भागा। इस बीच बाणों की वर्षा होने लगी।

[अभी है]

लक्ष्मी की कृपा

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह फिर पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतारकर, कन्धे पर डाल हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, कार्यसिद्धि के लिए श्रम ही काफी नही है, भाग्य का अनुकूल होना भी आवश्यक है। क्यों कि तुम्हारा भाग्य तुम्हारे अनुकूल नहीं है, इसलिए ही लक्षपुर के कहार की तरह मेहनत करने पर भी तुम्हें फल नहीं मिल रहा है। ताकि तुम्हें थकान न मालूम हो, उसकी कहानी सुनाता हूँ। सुनो।"

लक्षपुर का राजा लक्षदत्त बड़ा दानी था। वह किसी भी याचक को एक लाख रुपये से कम न देता था। इसलिए ही

बेताल कथाएँ

उसका नाम लक्षदत्त पड़ा था। यदि वह महाराजा किसी से सन्तुष्ट हो जाता, तो उसे किसी प्रकार की कमी न रहती थी।

राजा के महल के मुख्य द्वार पर लब्धदत्त नाम का कहार दिन रात, धूप में, वर्षा में, लूह में, राजा को दिखाई दिया करता। उस कहार की बुरी हालत देखकर राजा ने कभी उसकी मदद न की।

एक दिन राजा अपने लोगों के साथ शिकार के लिए निकला। राजा के घोड़े के पीछे अपनी छड़ी लेकर लब्धदत्त भी निकला। राजा जब घोड़े पर सवार होकर, धनुष बाण से, जंगली जानवरों का शिकार खेल रहा था तो उसने अपनी छड़ी से ही, जंगली सूअर और हरिणों को मार दिया।

"यह अभागा कहार कितना अच्छा शिकारी है।" राजा ने आश्चर्य किया। पर तब भी उसने उसकी कोई मदद न की।

एक बार जब लक्षदत्त अपनी सीमा के रहनेवाले सम्बन्धी पर आक्रमण करने गया, कहार भी राजा के साथ गया। उसने अपनी छड़ी से कई शत्रुओं को मार दिया। राजा उस कहार का पराक्रम देखकर बड़ा चकित हुआ। पर तब भी राजा ने उसको कुछ न दिया।

इस प्रकार पाँच वर्ष गुज़र गये। छटे वर्ष, राजा को यह बात सूझी। "यह अभागा छः साल से मेरे सामने दुनियाँ भर के कष्ट झेल रहा है, फिर भी उसकी मदद करने की मुझे न सूझी। किसी जन्म में इसने कोई पाप किया होगा। इसलिए ही आज वह इस प्रकार है। देखें, अभी इसका पाप विनाश हुआ है कि नहीं।"

यह सोच राजा अपने खज़ाने में गया। उसने कुछ रत्नों को चुनकर एक बेल में रख

दिया। अगले दिन जब राजा सामन्तों के साथ दरबार में बैठा था उसने ईशारा करके कहार को बुलवाया। कहार दरबार में आया। राजा के दिखाये हुए आसन पर वह बैठ गया।

राजा ने उससे कोई सुभाषित सुनाने के लिए कहा—"नदियाँ उसी समुद्र में जाती हैं, जिसमें पानी भरा पड़ा है। धन भी, धनवालों के पास जाता है। निर्धनों के पास नहीं जाता।" उसने यह श्लोक सुनाया। राजा बड़ा खुश हुआ और उसने उसके हाथ में बेल रखा। यह देख मन्त्री सामन्त चकित हो गये—चूँकि राजा यदि कभी किसी से खुश होता तो उस पर सुवर्ण वर्षा करता। पर इस बार राजा ने बहुत सन्तुष्ट होकर भी इसे केवल एक बेल ही दिया। देखनेवालों को यह अजीब-सा लगा।

कहार भी वह बेल लेकर सन्तुष्ट न था। जब वह उसे लेकर जा रहा था, तो उसे राजबन्दी नाम का एक भिक्षु दिखाई दिया। उसने राजा के दिये हुए फल को उसके हाथ में रख दिया। भिक्षु ने उसको अपनी ओढ़ी हुई एक चादर

दे दी। कहार ने उस चादर को बेचा और जो कुछ मिला उससे खाना खरीदा और फिर यथापूर्व राजमहल के मुख्य द्वार पर आ गया।

इस बीच भिक्षु ने राजा को देखा और वह बेल उसने उसे दे दिया। राजा ने उसे पहिचानकर पूछा—"यह तुम्हें कैसे मिला?" भिक्षु ने बताया कि कहार ने उसे दिया था। यानि उसका पाप अभी खतम नहीं हुआ है यह सोचकर राजा ने उस दिन की सभा समाप्त कर दी और फल लेकर घर चला गया।

अगले दिन फिर सभा हुई। राजा ने कहार को अपने पास बिठाया। जो पिछले दिन उसने श्लोक सुनवाया था, उससे फिर सुना। उसकी प्रशंसा की। फिर उसने उस बेल को उसके हाथ में रखा। वह उसे लेकर बाहर गया, उसे एक कर्मचारी दिखाई दिया। उसने उसको वह बेल दे दिया और उससे धोतियों का एक जोड़ा ले लिया।

उस कर्मचारी ने आकर वह बेल राजा को उपहार में दिया। राजा ने जब उसके बारे में पूछा, तो उसने बताया कि उसे एक कहार ने उसे दिया था। शायद अभी तक उसका पाप नहीं खतम हुआ है। राजा ने सोचा।

तीसरे दिन जब दरबार लगा, तो राजा ने कहार को फिर बुलाया। उससे पहिले वाला श्लोक फिर सुना। उसने अपना सन्तोष प्रकट किया। फिर वही बेल उसके हाथ में रखा। कहार ने उसे लिया और उसे राजमहल में आती विलासिनी नाम की नर्तकी को दे दिया।

वह राजमहल में जा रही थी। उससे उसने सोने का एक सिक्का लिया।

विलासिनी ने वह फल फिर राजा को भेंट में दे दिया। लक्ष्मी देवी की कृपा अभी तक शायद कहार पर नहीं हुई है।" राजा ने सोचा।

चौथे दिन भी राजा ने उस कहार को दरबार में बुलवाया। श्लोक सुनने के बाद फिर उसने वह फल देना चाहा। पर इससे पहिले कि कहार उसे पकड़ सका, वह नीचे गिर पड़ा और वह टूट गया। जब उसमें रखे रत्न चमकने लगे, तो सब बड़े चकित हुए।

तब राजा ने दरबारियों को सारी बात बताकर कहा—"इस कहार के पाप कब खतम होंगे, मैं यह देख रहा था। आज वे खतम हो गये हैं। आज लक्ष्मी की कृपा इस पर हुई है।" राजा ने उस फल में रखे रत्न ही उसको नहीं दिये, बल्कि उसे छोटा-सा राज्य भी दिया। उसे अपना सामन्त भी बनाया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा—"राजा, कहार ने क्या पाप किया था कि महादानी लक्षदत्त से वह पाँच साल तक कोई दान न पा सका और उस लक्ष्मी ने जिसने कि लगातार तीन दिन तक कृपा न की थी, क्यों चौथे दिन कृपा की?

यदि इन सन्देहों का तुमने जान बूझकर समाधान न किया, तो तुम्हारे सिर के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे।

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"कहार का सारा पाप उसके याचक न होने में ही था। लक्षदत्त जैसा महादाता बिना माँगे किसी को नहीं देता था। कहार शक्ति सम्पन्न था। वह राजाश्रय के लिए पाँच साल इन्तज़ार करता रहा। इस बीच उसने एक बार शिकार में, दूसरी बार युद्ध में अपना असाधारण पराक्रम दिखाया। राजा की दृष्टि में वह तब भी याचक नहीं था.। राजा की अन्तरात्मा तब उसे सताने लगी। पाँच वर्ष से वह कहार उसकी ड्योढ़ी पर खड़ा था। इसलिए राजा ने उसे दान देने का निश्चय किया। पर कैसे उसे कोई दान दे, जिसने दान माँगा ही न हो। इसलिए उसने गुप्तदान करके उसको परखना चाहा। यदि किसी पापवश बेल में रखे रत्न कहार को न मिले थे, तो जिन तीनों को वह फल दिया गया था, वे तीन भी अवश्य पापी होंगे, क्योंकि उन्होंने वह फल राजा को वापिस कर दिया था। आखिर कहार पर लक्ष्मी को सन्तुष्ट करने का उपाय भी राजा ने ढूँढ निकाला। इससे पहिले कि वह उसके हाथ पहुँचता, उसने उसे नीचे गिरा दिया।

इसलिए गल्ती शुरु से लक्षदत्त की थी। न लक्ष्मी देवी की थी, न कहार के कभी किये हुए पाप की ही।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और फिर पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)
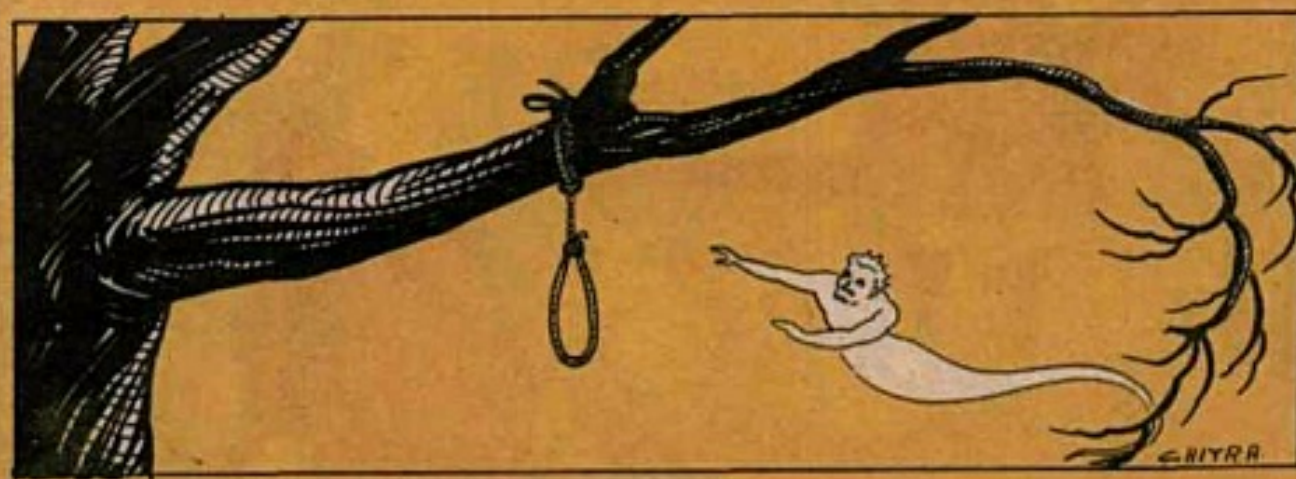
राजा का लड़का, मन्त्री का लड़का

पुष्करावती नगर के राजा गूढ़सेन के एक ही लड़का था। उसकी बचपन से मन्त्री के लड़के से बड़ी दोस्ती थी। दोनों की एक ही उम्र थी। शक्लें भी मिलती जुलती थीं। वे एक दूसरे को छोड़ कर एक क्षण भी न रह पाते थे।

कुछ दिन बाद, राजा के लड़का का अहिच्छत्र में शादी करने का निश्चय किया गया। राजा के लड़के ने मन्त्री के लड़के को अपने साथ हाथी पर सवार किया। अपने लोग बाग के साथ वे अहिच्छत्र के लिए निकल पड़े। वे शाम को इक्षुमति नदी के तट पर पहुँचे। वहाँ उन्होंने पड़ाव किया। वहाँ भोजन करने के बाद राजा के लड़के ने दादी से कहानी सुनाने के लिए कहा। और कहानी सुनते सुनते, वह थकान के कारण सो गया। फिर दादी भी सो गई।

पर मन्त्री का लड़का न सोया उसे आकाश में किसी का बात करना सुनाई दिया। उसे लगा किसी से कोई देवियाँ बातें कर रही हो, उनमें से एक ने कहा—"यह प्रापी....कहानी के पूरा होने से पहिले ही सो गया। इसलिए इसे यह शाप दे रही हूँ। यह हार नीचे फेंक रही हूँ। जब वह सवेरे उठकर इसे छुयेगा, तो वह मर जायेगा।"

"अगर वह इस तरह न मरा, तो आम के पेड़ से आम तोड़ेगा और उसे तोड़ते ही, वह मर जायेगा।

"अगर वह तब भी न मरा तो जब यह शादी के घर में पहुँचेगा तो उसका

अगला भाग ढ़हकर इस पर गिरेगा और यह मर जायेगा।"

"अगर वह इस तरह भी न मरा तो शयन कक्ष में प्रवेश करते ही, वह सौ बार छींकेगा और अगर हर बार किसी ने "चिरंजीवी" न कहा तो वह निश्चय ही मर जायेगा।" चौथी ने कहा।

"इन बातों को सुनकर किसी ने यदि उससे कहकर, उसके प्राणों की रक्षा करने का प्रयत्न किया तो वह भी मर जायेगा।" पाँचवीं ने कहा।

इसके बाद वे देवियाँ आकाश मार्ग से कहीं चली गई।

मन्त्री के लड़के पर मानों गाज़-सी गिर गई। राजा के लड़के के मरने पर वह जीवित नहीं रह सकता था। यह सोच, राजा के लड़के से इन शापों के बारे में कहकर, अपनी मौत भी नहीं बचाई जा सकती थी। तब उसकी मौत न होकर मेरी मौत होगी। इसलिए मन्त्री के लड़के ने अपने दोस्त को बिना कुछ कहे उसकी रक्षा करने की ठानी। रात को वह सो न सका।

सवेरे उठकर सब निकल पड़े। राजा के लड़के को ज़मीन पर कोई हार दिखाई दिया। जब उसने उसे उठाना चाहा तो मन्त्री के लड़के ने उसे रोकते हुए कहा—"उसे न छुओ वह कोई जादू का हार माल्म होता है। अगर ऐसा नहीं होता तो हमारे सैनिकों में से उसे कोई अवश्य ले लेता।" राजा ने अपने मित्र की बात न टुकरानी चाही और उस हार को छोड़ दिया।

कुछ दूर जाने के बाद उनको फलों से लदा आम का पेड़ दिखाई दिया। राजा के लड़के ने आमों को तोड़ना चाहा। "मित्र। उन्हें न तोड़ो। यदि वे खाने के फल होते जंगल के बन्दर उन्हें कभी का खा चुके होते।" मन्त्री के लड़के ने कहा। उतने सुन्दर फलों को छोड़ते हुए राजा के लड़के को अफ़सोस तो हुआ, पर उसने अपने मित्र की बात न टुकराई। वह उसे बिना तोड़े ही आगे बढ़ गया।

फिर जब अहिच्छत्र पहुँचकर शादी के घर में घुसने ही वाला था कि मन्त्री के लड़के ने उसे पीछे घसीटा। उसी समय घर का अगला भाग ढहकर नीचे गिर गया।

शादी हो गई। उस दिन रात को, राजकुमार शयनकक्ष में गया। मन्त्री का लड़का, पहिले ही उस कमरे में आकर छुप गया था। राजकुमार बिस्तरे पर लेटा ही था कि छींकने लगा। उसने लगातार सौ बार छींका और हर बार मन्त्री के लड़के ने "चिरंजीवी" कहा। सौ बार "चिरंजीवी" कहने के बाद मन्त्री का लड़का बड़ा खुश हुआ। वह जहाँ छुपा हुआ था वहाँ से उठा, राजकुमार के देखते देखते कमरे में से बाहर निकल गया।

राजकुमार को यह देखकर ईर्ष्या हुई। उसने अपनी दोस्ती की भी परवाह न की। द्वार पालक को बुलाकर कहा—"तुम उस दुष्ट को पकड़ कर कैद करो, जो अभी मेरे शयनकक्ष से गया है और सवेरा होते ही उसे फाँसी दे देना।"

सैनिकों ने मन्त्री के लड़के को रात भर जेल में रखा और सवेरे सवेरे उसको लेकर बध्यभूमि की ओर गये। तब मन्त्री के लड़के ने उनसे कहा—"तुम पहिले मुझे राजकुमार के पास ले जाओ। मुझे उससे एक बात कहनी है उसके बाद तुम मुझे मार देना।

उन्होंने राजकुमार को जाकर बताया कि वह यूँ कह रहा था। उसके मन्त्रियों ने भी मन्त्री के लड़के की बात सुनने की सलाह दी। उसने जो कुछ गुजरा था, उसके मुँह सुना। क्योंकि घर का ढ़ह जाना स्वयं अपनी आँखों देखा था इसलिए उसने सोचा कि और बातें भी ठीक होंगी। उसने मन्त्री के लड़के को माफ कर दिया और वे हमेशा की तरह अपनी दोस्ती निभाते रहे।

पन्नालाल के गांव में दम्भराम रहा करता था। वह होने को तो सम्पत्तिवाला था, पर उसकी आदतें खराब थीं। वह फिजूलखर्ची करता। जुआ वगैरह खेलता। अपना बहुत कुछ धन खो बैठा और दोस्तों से बहुत कर्ज़ भी उसने ले लिया।

एक आदमी ने जिससे दुम्भराम ने दो हज़ार रुपये कर्ज़ ले रखा था धमकी दी कि यदि उसने दो चार दिन में उसका कर्ज़ न चुका दिया, तो वह उसके मकान को ले लेगा। तब तक दम्भराम की पत्नी भी न जानती थी कि उसके पति ने कर्ज़ ले रखा था। उसने दम्भराम से कहा—"हमें अपना घर बचाना होगा। ये गहने ले जाकर किसी अच्छे आदमी के यहाँ रेहन रखकर पैसा लाइये और जैसे तैसे अपना कर्ज़ चुकाइये। लड़की की शादी के पहिले जैसे भी हो, कर्ज़ चुकाकर गहने छुड़वा लीजिये।"

दम्भराम की पत्नी अपने माँ बाप के दिये हुए इन गहनों को नहीं पहिन रही थी। उसने उन्हें अपनी लड़की के लिए एक जगह हिफाजत से रख रखे थे। दम्भराम जानता था कि गिरवी रखने के लिए या उनको बेचने के लिए उसकी पत्नी नहीं मानेगी। नहीं तो उनको वह कभी का बेच चुका होता। एक बार वह जुये में बहुत-सा रुपया हार गया और रुपया न दे सका, तो उसने ये गहने चुरा लिए। उन्हें बेच बाचकर जुये में जीतनेवाले को रुपया दे दिया। फिर वे दोनों सुनार के पास गये और उससे वैसे ही नकली

गहने बनवा लिए। दम्भराम ने उन्हें लाकर पत्नी की पेटी में रख दिये। अब जब पत्नी ने गहने गिरवी रखकर, कर्ज़ चुकाकर मकान बचाने के लिए कहा तो दम्भराम ने कहा—"अच्छा, तो वैसे ही करेंगे।" वह पेटी लेकर चला गया।

दम्भराम सोच ही रहा था कि ये गहने किसके मत्थे मढ़े जायें कि पन्नालाल उसे याद आया। वह गहनों की पेटी लेकर पन्नालाल के पास गया। "पन्नालाल! मैने पहिले ही तुम से तीन सौ रुपये ले रखे हैं। तुम्हें शायद याद भी न हो। पर मैं नहीं भूला हूँ। बड़ी आफ़त में फँसा हूँ। तुम्हीं बचा सकते हो। हमारी लड़की के लिए एक सम्बन्ध आया है। शादी के खर्च के लिए तुरत तीन हज़ार रुपये चाहिये। मान लूँगा कि तुमने ही मेरी लड़की की शादी की है। ये रखे हैं मेरी पत्नी के गहने। चाहो तो तुम देख लो। "अरे अरे....इसकी चाबी मैं घर ही छोड़ आया।" उसने कहा जैसे सचमुच कुछ याद कर रहा हो।

"तुम कह रहे हो यही काफ़ी है। क्या गहने देखने की ज़रूरत है? चाबी अपने पास रखो, अपनी पेटी बाद में तुम ही ले जाना। तुम्हें पैसे दे देता हूँ। तुम लड़की की शादी करो, जितनी जल्दी यह हो, उतना ही अच्छा।" पन्नालाल ने उसको तीन हज़ार रुपये दे दिये और पेटी को ले जाकर अन्दर रख दिया।

उस पैसे से दम्भराम ने अपना कर्ज़ चुका दिया और अपना घर बचा लिया। दम्भराम की पत्नी भी यह जानकर खुश हुई कि किसी ऐसे वैसे के यहां गहने गिरवी न रखकर, उसका पति उन्हें पन्नालाल के यहां रखवा आया था।

समय बीत रहा था। दम्भराम की पत्नी गहने छुड़वाने के लिए अपने पति को तंग कर रही थी। "पैसा नहीं मिला है। यूँहि न तंग करो।" दम्भराम पत्नी से कहा करता। वह जैसे भी हो पन्नालाल की नज़र से बचकर फिर रहा था, एक बार जब पन्नालाल ने पूछा—"क्या लड़की की शादी अच्छी तरह हो गई? तो उसने कहा—"वह सम्बन्ध तय नहीं हुआ और सम्बन्ध देख रहे हैं।"

इस तरह दो साल गुज़र जाने के बाद, सचमुच उसकी लड़की के लिए एक अच्छा सम्बन्ध आया। वधु वर ने एक दूसरे को देखकर पसन्द भी किया। परन्तु वर के पिता ने जिद पकड़ी कि कन्यादान गहनों के साथ किया जाये। जब लड़की के पिता ने कहा कि यथाशक्ति वह गहने देगा, तो वर का पिता न माना। वर ने स्वयं अपने पिता को समझाया, पर उसने उसकी भी न सुनी।

एक अच्छा सम्बन्ध हाथ से छुटा जा रहा था। वधु रोने लगी, पत्नी ने दम्भराम से गहने छुड़ा लाने के लिए कहा। दम्भराम ने अपनी पत्नी को डाँटा फटकारा और यह कहकर वह घर से चला गया कि वह एक और सम्बन्ध ढूँढ़ लायेगा।

यह सोच कि जब तक पन्नालाल दया नहीं करेगा, तब तक उसकी लड़की की शादी न होगी दम्भराम की पत्नी अपनी लड़की को साथ लेकर, पन्नालाल के घर गई। पन्नालाल तो घर में न था। पर मीनाक्षी थी, दम्भराम की पत्नी ने मीनाक्षी की मिन्नत की कि कुछ भी हो वह उसकी लड़की की शादी करवा दे।

"सच है, कर्ज़ के कारण क्या अच्छा सम्बन्ध कहीं छोड़ा जाता है? उनको
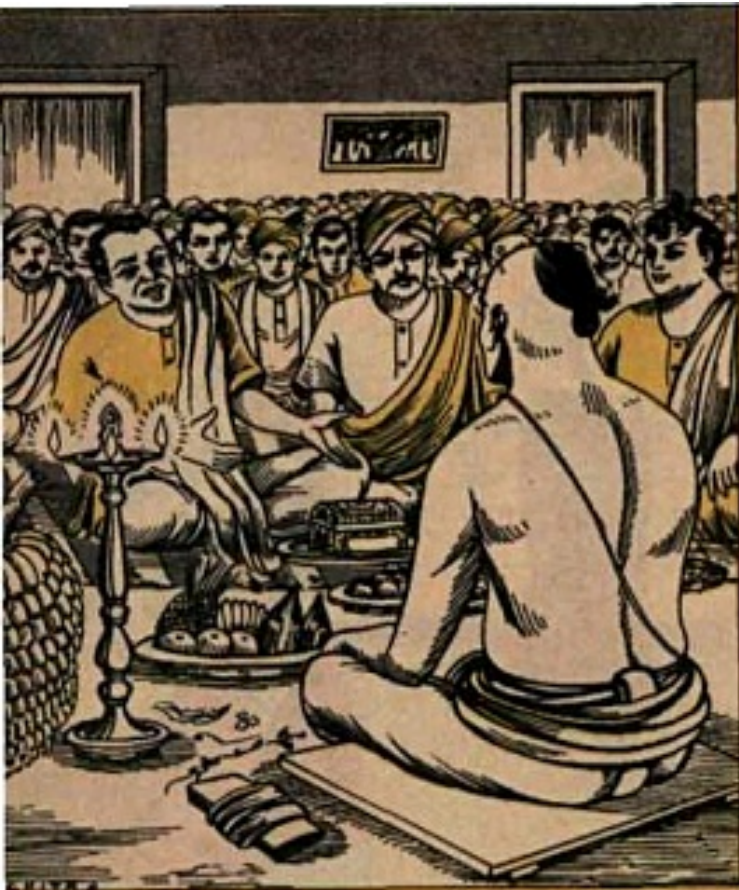
आने दो, मैं तुम्हारी गहनों की पेटी तुम्हें दिलवा दूँगी। पैसा बाद में चुका देना। तुम इस सम्बन्ध को न जाने देना।" मीनाक्षी ने कहा।

दम्भराम की पत्नी घर गई। "कल सगाई के लिए आइये। आपकी इच्छा के अनुसार ही शादी होगी।" उसने वर पक्ष को खबर पहुँचवाई। पति जब आया तो उसके सामने पन्नालाल और मीनाक्षी की खूब प्रशंसा की। दम्भराम ने सोचा जो कुछ हुआ अच्छा ही हुआ था। अगले दिन पन्नालाल गहनों की पेटी लेकर दम्भराम के घर आया। दम्भराम ने सगाई के समय पन्नालाल को भी रहने के लिए कहा।

कुछ ही देर में वर, वर का पिता पुरोहित आदि, आये।

दम्भराम ने गहनों की पेटी उनके सामने रखकर कहा—"ये मेरी पत्नी के गहने हैं। इनके साथ ही हम कन्यादान करना चाहते हैं। परन्तु दुर्भाग्यवश इनको पन्नालाल जी के यहाँ तीन हज़ार के लिए गिरवी रखना पड़ा। परन्तु उन्होंने कृपा करके ये गहने हमें वापिस दे दिये हैं और कहा है कि हम धीमे धीमे अपना कर्ज़ चुका दें। उनकी कृपा से ही यह शादी हो रही है।"

"यह सब कहने की क्या ज़रूरत है, पेटी खोलकर कम से कम उनको गहने दिखा तो दो।" पन्नालाल ने कहा।

दम्भराम उठकर ताली लाया। सब को यह देख आश्चर्य हुआ कि पन्नालाल के पास चाबियाँ न थीं। दम्भराम ने जो ताली लाकर दी, वह पन्नालाल ने वर के पिता को दी। उसने पेटी खोली और उसमें से गहने उठाकर कहा—"अरे ये, तो नकली गहने हैं, सब मिलाकर पचास रुपये के न होंगे।" यह कहकर वह दम्भराम की ओर तरेरने लगा।

दम्भराम और भी जोर से पन्नालाल की ओर तरेरने लगा।

"यह क्या पन्नालाल! भरोसा किया हमने और तुमने हमें यह धोखा दिया। असली गहने लेकर, नकली गहने रख दिये इसमें और ऊपर से परोपकारी कहलाते हो। तुम जैसे को मार देना भी पाप नहीं है।" वह चिल्लाया। "पर चाबी तो आपके पास ही थी।" वर ने कहा।

दम्भराम की पत्नी ताड़ गई कि उसके पति ने क्या धोखा किया था। "यह सब मेरी बदकिस्मती है। इस तरह की दुष्टता करके, अपने हाथों मेरी लड़की का गला घोंट रहा है। कैसी आफ़त आ पड़ी है, भगवान।" वह रोने लगी।

पन्नालाल ने दम्भराम की पत्नी को अलग ले जाकर कहा—"देखो, मेरी बदनामी हो जाये तो कोई खास बात नहीं है। पर अगर तुम जान भी जाओ कि यह किसकी करतूत है, तो ऊपर से कुछ न कहना। यह विवाह होकर रहेगा। तुम चुप चाप रहो।"

उसने इधर आकर कहा—"अभी आध घंटे में आता हूँ। तब तक मेहरबानी करके आप जरा इन्तजार कीजिए।"

वह जल्दी जल्दी घर गया "तुम एक लड़की की जिन्दगी तबाह होने से रोक सकती हो। तुम अपने गहने दो।" उसने पत्नी से कहा।

मीनाक्षी अपनी गहनों की पेटी लेकर, पन्नालाल के साथ वह भी आयी।

पन्नालाल की गैर हाजिरी में दम्भराम ने यह फैलाने की कोशिश की कि पन्नालाल ने धोखा देना चाहा था। पर किसी ने भी विश्वास न किया कि पन्नालाल ने धोखा दिया था। क्यों कि पन्नालाल ने कहा था इसलिए वर पक्षवाले न गये थे।

इतने में पन्नालाल आ गया। उसने मीनाक्षी के हाथ गहनों की पेटी खुलवाई। गहनों को वरपक्ष के सामने रखकर कहा हम ये गहने दुल्हिन को दे देंगे, विवाह निश्चित करो।"

इस बीच वर ने, जो, नकली गहने देख रहा था, कहा—"इस गहने पर वेन्कट सुनार का नाम है।"

यह बात कान में पड़ते ही दम्भराम का मुँह फीका पड़ गया। पन्नालाल ने नकली गहने पेटी में रखे। पेटी को बन्द करते हुए उसने कहा—"यह सब गड़बड़ी अब काहे को करते हो? दम्भराम ने इन्हें मेरे पास गिरवी रखा था। वे वैसे ही मेरे पास रहेंगे।"

पन्नालाल की उदारता सब को मालूम हो गई। वर का पिता, मीनाक्षी के गहने लिए बगैर ही विवाह के लिए राजी हो गया। यह बात देखते देखते सारे गाँव में फैल गई। एक बुजुर्ग दम्भराम के घर आया उसने सबके सामने कहा—"ये हैं इस लड़की के गहने। जुये में हार कर, दम्भराम ने मुझे ये गहने दिये थे। हम दोनों ने मिलकर नकली गहने बनवाये थे। जब मैंने यह अफ़वाह सुनी कि पन्नलाल ने असली गहने निकालकर नकली गहने पेटी में रख दिये हैं तो मैं चुप न रह सका। इन्हें वापिस देने चला आया। मैंने इन्हें जुये में जीता था। मैंने इन्हें कमाया न था। इसलिए ये अगर चले भी गये, तो मुझे कोई फिक्र नहीं है।"

दम्भराम की शादी अच्छी तरह हो गई। पर दम्भराम, जो तब तक अच्छी तरह जी रहा था, उसकी पोल खुल गई।

जुड़वे बच्चे

एक देश में एक मछुवा रहा करता था। मछली पकड़ते पकड़ते उसने काफ़ी रुपया बना लिया। पर किसके लिए? उसके कोई बाल बच्चे न थे।

एक दिन जब मछुवा, समुद्र में मछलियाँ पकड़ने गया हुआ था, तो एक बुढ़िया उसके घर आई। उसकी पत्नी से उसने कहा—"बहुत सी सम्पत्ति कमा ली है, पर बच्चे न हों, तो क्या फायदा?"

"बच्चे किस्मत में नहीं हैं। क्या करें?" मछुवे की पत्नी ने कहा।

"यह बेमतलब की बात है। जैसा मैं कहूँ, वैसा करो। अवश्य बच्चे पैदा होंगे। तुम अपनी पति से एक सुनहली मछली पकड़कर लाने को कहो। उसके छः टुकड़े काट देना। पकादेना। एक टुकड़ा तुम खाना, एक और तुम अपने पति से खाने के लिए कहना। एक अपनी कुतिया को देना। एक अपनी घोड़ी को देना और बाकी दो टुकड़ों को, अपने घर के दोनों ओर गाड़ देना।" यह कहकर बुढ़िया अपने रास्ते चली गई।

मछुवे की पत्नी ने जैसा कि बुढ़िया ने कहा था वैसा ही किया। अपने पति से उसने सुनहली मछली मंगवाई। उसके छः टुकड़े किये। एक खुद खाया। दूसरा पति को दिया। एक कुतिया को खिलाया। एक घोड़ी को खिलाया और बाकी दोनों टुकड़े घर के दोनों ओर गाड़ दिये।

कालक्रम से घर के दोनों ओर दो पेड़ उग आये। कुतिया और घोड़ी के भी दो दो बच्चे हुए। मछुवे की पत्नी ने

जुड़वें बच्चों को जन्म दिया। उन बच्चों के नाम उन्होंने मित्र और मकर रखा।

उन दोनों बच्चों में कोई भेद नहीं दिखाई देता था। माँ भी उनमें कोई भेद न देखती थी। वह दोनों को, अलग अलग कपड़े पहिनाती।

धीमे धीमे पेड़, कुत्ते, घोड़े बड़े हो गये। जुड़वे बच्चे भी बढ़कर जवान हो गये। उन्होंने दुनियाँ देखनी चाही। पर माँ बाप ने दोनों लड़कों को एक साथ घर से जाने से रोका। इसलिए बड़े मित्र ने जाते जाते मकर से कहा—"भैय्या, मेरे पेड़ की जरा रखवाली करते रहना। जब तक वह हरा भरा है, मेरे बारे में फिक्र करने की कोई जरूरत नहीं है। पर जब वह मुरझाता लगे, तो समझना कि मैं किसी दिक्कत में हूँ और तुम तुरत मुझे देखने निकल पड़ना।" वह घोड़े पर सवार हो, कुत्ते को साथ लेकर निकल पड़ा।

मित्र कई दिन बाद एक नगर में आया। वहाँ एक बुढ़िया के यहाँ उसने पड़ाव किया। उसने उस बुढ़िया से पूछा—"क्या खबरें हैं इस शहर की?"

"और क्या खबर है बेटा? यहाँ के राजा की जगन्मोहिनी नाम की लड़की है। उससे शादी करने कितने ही आये, पर राजा ने सब को मरवा दिया।

मित्र ने बुढ़िया के घर की खिड़की में से राजमहल की ओर देखा। "उन बातों से भला हमें क्या वास्ता? क्या तुम्हें गाकर सुनाऊँ।" वह तम्बूरा लेकर गाने लगा।

राजकुमारी जगन्मोहिनी, अपने कमरे की खिड़की के पास आई और गाना सुनती सुनती तन्मय हो गई। गाना खतम होते ही उसने अपने नौकर को बुलाकर कहा—"बुढ़िया के घर में कोई गा रहा

है। उससे जाकर कहो कि मैं उसे बुला रहा हूँ।"

राजकुमारी की खबर पाते ही मित्र राजमहल में गया। उसे देखते ही जगन्मोहिनी उस पर मुग्ध हो गई। उसने अपने पिता के पास जाकर कहा—"पिताजी, मैं जिससे शादी करना चाहती हूँ। वह मिल गया है।"

"कौन है वह? उसे मेरे पास भेजो।" राजा ने कहा।

मित्र, राजा के सामने गया। "मेरी लड़की तुम से शादी करना चाहती है। पर मुझे कैसे मालूम हो कि तुम उसके योग्य हो कि नहीं हो। जो मैं कहूँ वह करो। अगर तुमने वैसा नहीं किया, तो तुम्हें फाँसी पर चढ़वा दूँगा।"

"मैं भला उस दिक्कत में क्यों फसूँ, मैंने कब कहा है कि मैं आपकी लड़की से शादी करना चाहता हूँ।" मित्र ने कहा।

"क्या बकते हो? तुम राजकुमारी को इतनी नाचीज़ समझते हो। कौन है वहाँ? इसे ले जाकर फाँसी पर चढ़ा दो।" राजा ज़ोर से चिल्लाया।

"नहीं नहीं जो आप कहेंगे वही करूँगा। कहिये क्या हुक्म है?" मित्र ने कहा।

राजा कुछ शान्त हुआ। मित्र को एक मैदान में ले गया। वहाँ पड़े हुए एक बड़े लकड़ी के ठूँठ को दिखाकर उसने कहा—"कल सवेरे तुम्हें तलवार की एक चोट से इसे काटना होगा। अगर काट दोगे तो मेरी लड़की से शादी करोगे, नहीं काट पाओगे, तो फाँसी पर चढ़ा दिये जाओगे।"

मित्र बुढ़िया के घर गया।

"क्यों बेटा ! क्यों मुँह यूं लम्बा किये हुए बैठे हो ?" जब बुढ़िया ने पूछा, तो उसने बताया कि मेरा जी ठीक नहीं है। मैं बहुत चिन्तित हूँ।

उसका गाना सुनने के लिए जगन्मोहिनी काफ़ी देर तक अपने कमरे की खिड़की के पास खड़ी रही। पर जब उसको गाते न देखा, तो वह स्वयं बुढ़िया के घर चली आई। "आज क्यों नहीं गा रहे हो ?" उसने पूछा।

"तुम्हारे कारण कल मुझे फाँसी दी जा रही है। उस हालत में मैं क्या गाऊँ ?" मित्र ने कहा।

उसने जो कुछ हुआ था, उसे बताया। राजकुमारी ने अपने सिर का एक बाल उसे देते हुए कहा—"यदि तुमने इसे अपनी तलवार पर लपेटा और तब उससे चोट की, तो ठूँठ के तुरत दो टुकड़े हो जायेंगे।"

मित्र ने गाकर उसको सन्तुष्ट करके उसे भेज दिया। राजकुमारी का उसके प्रति मोह दुगना हो गया।

अगले दिन सवेरे मित्र मैदान में गया। अपनी तलवार पर उसने जगन्मोहिनी का बाल लपेटा और उससे जोर से ठूँठ पर मारा। ठूँठ के दो टुकड़े हो गये।

राजा ने यह देखकर कहा—"अच्छा है। तुम्हें एक और काम देता हूँ। तुम अपने घोड़े पर सवार होकर, दोनों हाथों में दो पानी से भरे पात्र लो और तीन घंटे तक सवारी करो। अगर पात्रों में से एक बून्द भी पानी गिरा तो तुम्हें फाँसी पर चढ़वा दूँगा।"

मित्र जगन्मोहिनी के पास गया। "देखो, तुम्हारे कारण मुझ पर कितनी आफ़त आ पड़ी है। राजा मुझ से असम्भव काम करने के लिए कह रहे हैं।" कहकर उसने जो कुछ हुआ था वह बताया।

जगन्मोहिनी ने उसको अपने कानों की दो बालियां देते हुए कहा—"अरे। तुम्हारे प्राणों की रक्षा करने के लिए क्या मैं नहीं हूँ ? तुम तो मुझे अपने प्राणों से भी अधिक प्यारे हो। इन दो बालियों को दो पात्रों में रखकर, यदि उनमें पानी डाला, तो वह तुरत जम जायेगा। कितनी भी तेज़ी से घुड़सवारी करो, पर पानी नहीं छलकेगा।"

मित्र उन बालियों की मदद से बिना एक बून्द पानी गिराये तीन घंटे सवारी करके चला आया।

"यह सब तो ठीक है। पर एक छोटी-सी परीक्षा और लेनी होगी। कल तुम्हें एक आदमी से कुश्ती करनी होगी। अगर तुमने उसको पछाड़ दिया, तो तुम्हारी शादी मैं अपनी लड़की से कर दूँगा। वरना तुम्हें फांसी पर चढ़ा दूँगा।

उस दिन रात को मित्र बड़ा खुश था। वह तम्बूरा लेकर बहुत देर तक गाता रहा। जगन्मोहिनी उसके पास आई। उसने कहा—"आज बड़े मजे में गा रहे हो ?"

"क्यों नहीं ? कल मुझ से किसी से कुश्ती करने के लिए कहा गया है। वह
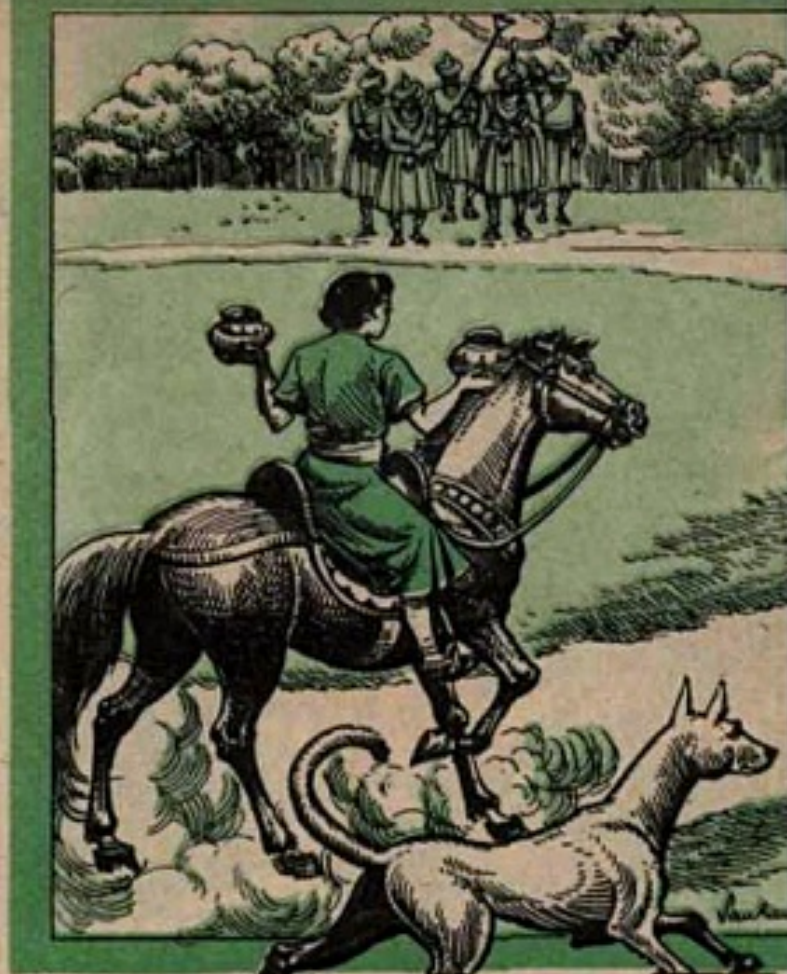
मेरे जैसा ही होगा। इसलिए कोई डर नहीं है।" मित्र ने कहा।

जगन्मोहिनी यह सुनकर बड़ी चिन्तित हुई। "यह ही सबसे अधिक खतरनाक परीक्षा है। कल तुम मुझ से ही कुश्ती करने जा रहे हो। कल मुझे पीने के लिए कुछ दिया जायेगा। उससे मेरा शरीर पत्थर का-सा हो जायेगा। भयंकर हो जायेगा। तुम आकर देखकर ही डर जाओगे। वह तुम्हें अपने हाथ से चूरा चूरा कर सकता है। देखो यह जादू का जल लो। कल जब मैं तुम्हारे पास आऊँ,

"शाबाश। मैं अपनी लड़की की तुमसे शादी कर दूँगा। कल ही मुहूर्त है।" राजा ने कहा।

पर मित्र जगन्मोहिनी से शादी नहीं करना चाहता था। उस दिन आधी रात को, बिना बुढ़िया को बताये वह अपने घोड़े पर सवार होकर, कुत्ते को साथ लेकर, उस नगर से भाग गया।

सवेरा होते होते वह एक और राज्य में पहुँचा। उसकी राजधानी समुद्र के तट पर थी। वहाँ वह एक सराय में ठहरा।

तो मुझ पर इस पानी को छिड़कना। तब मैं बेहोश-सी हो जाऊँगी और तुम मुझे नीचे पटक देना।"

मित्र उसके दिये हुए पानी के लोटे को लेकर अगले दिन उस अखाड़े में गया, जहाँ कुश्ती होनेवाली थी। तब उससे कुश्ती करने के लिए दस फीट ऊँचा भूत-सा कोई आया। उस महाभूत के पास आते ही, मित्र ने मन्त्र जल को उस पर छिड़का। तुरत वह आकार बेहोश-सा हो गिर गया। मित्र ने उसकी कमर पकड़कर उसे पटक दिया।

जब वह सवेरे सराय से निकला, तो उसने देखा कि एक झुण्ड समुद्र तट के एक पहाड़ पर धीमे धीमे चढ़ रहा था। यह जानने के लिए वे सब क्या कर रहे थे, वह अपने घोड़े पर सवार होकर उनके पीछे पीछे गया।

उस झुण्ड के बीच में उसे एक राजकुमारी दिखाई दी। उसके हाथों पर एक सोने की जंजीर बंधी हुई थी। उस जंजीर को पकड़कर उसे चलाया जा रहा था। उस जंजीर से उसे पहाड़ से बांधकर लोग चले गये।

मित्र ने राजकुमारी को दुःखी होता देखा। वह घोड़े से उतर कर उसके पास गया। वह बड़ी सुन्दर थी। "तुम क्यों रो रही हो?" उसने राजकुमारी से पूछा।

"मैं मरने जा रही हूँ। हमारे नगरवाले समुद्र सर्प को प्रति वर्ष एक कन्या बलि देते हैं। इस बार मेरी बारी है। पर तुम यहाँ क्यों हो? जल्दी चले जाओ। नहीं, तो जो मेरी हालत हुई है, तुम्हारी भी वही होगी।" राजकुमारी ने कहा।

"मैं नहीं जाऊँगा।" मित्र ने कहा। उसको, उसके प्रति प्रेम उमड़ आया। इतने में, समुद्र में ज्वार आया। एक महासर्प को उसमें से आता देख, मित्र ने अपना कुत्ता उसकी ओर भगाया।

कुत्ते ने साँप को पकड़ लिया। मित्र अपनी तलवार लेकर सांप की ओर लपका। सर्प बड़ी जोर से लड़ा। परन्तु आखिर कुत्ते और उसने मिलकर उस सर्प का खातमा कर दिया।

इसके बाद मित्र ने राजकुमारी के बन्धन तोड़ दिये। उसे अपने घोड़े पर सवार करके, राजा के पास ले गया। राजा ने सब कुछ सुनकर, अपनी लड़की का मित्र से विवाह कर दिया। वह राजकुमारी के साथ अपने ससुराल में रहता आराम से रहने लगा।

उसकी एक दिन शिकार खेलने की मर्ज़ी हुई।

"अगर शिकार पर जाना चाहते हो, तो अपने नौकर चाकर को लेकर जाओ।" राजा ने कहा।

"मुझे नौकर चाकरों की ज़रूरत नहीं हैं। मैं अकेला ही चला जाऊँगा।" राजकुमारी से शादी करने के बाद, कदम कदम पर नौकरों का होना उसे नहीं

पसन्द था। वह अकेला रहने के लिए ही शिकार पर जा रहा था।

वह अपने कुत्ते को लेकर, घोड़े पर सवार हो निकल पड़ा। कुछ देरी में उसे प्यास लगी। उसे तब जंगल में एक कुटिया दिखाई दी। उस कुटिया में एक बुढ़िया थी। वह न जानता था कि वह जादूगरनी थी। उसने उससे थोड़ा पीने को पानी माँगा।

"तुम्हारे कुत्ते को देखकर मुझे डर लग रहा है। उसे एक बार मुझे चाबुक से डराने दो।" बुढ़िया ने कहा।

वह एक हरे रंग की चाबुक लायी और उससे कुत्ते को मारा। तुरत कुत्ता पत्थर हो गया। इसके बाद, उसने चाबुक मित्र पर और उसके घोड़े पर मारी। वे भी पत्थर हो गये। जादूगरनी हँसती हँसती अपनी कुटिया में चली गई।

मित्र के पत्थर होते ही, घर के सामने का पेड़ मुरझाने लगा। यह देख मकर जान गया कि उसके भाई पर आपत्ति आ पड़ी थी। वह अपने कुत्ते और घोड़े के साथ निकल पड़ा।

बहुत दिन के सफर के बाद वह समुद्र तट के नगर के सराय में पहुँचा। सराय के मालिक ने कहा—"माफ कीजिये, जब आपका राजकुमारी से विवाह हुआ, तो मैं न आ सकी। कम से कम अब मेरे शुभ अभिवन्दन स्वीकार कीजिये।"

मकर जान गया कि सराय का मालिक, उसे, उसका भाई समझ रहा था और वह यह भी जान गया कि उसके भाई ने शादी करली थी। मकर ने सराय के मालिक से कहा—"मन में शुभकामनायें रखना अच्छा है। उनको व्यक्त करना अच्छा नहीं है।" यह कहकर वह राजमहल गया।

उसको देखते ही, राजा ने कहा—"अरे बेटा! इतने दिन कहाँ चले गये थे? हम डर रहे थे कहीं तुम पर कोई आपत्ति तो नहीं आ गई है!" उसे भी मकर को देखकर मित्र का भ्रम हो रहा था।

मित्र की पत्नी ने भी वही गलती की। उसने उसके पास आकर कहा—"हम आपके बारे में बड़ी फिक्र में रहे।" मकर ने उसकी ओर इस प्रकार देखा जैसे वह किसी अजनबी को देख रहा हो फिर उसने अपना सिर एक ओर मोड़ लिया। इस प्रकार का बेरुखापन देखकर, मित्र की पत्नी रोती रोती चली गई।

उस दिन रात को मकर, राजमहल में न ठहर कर सराय में रहने चला गया। वह जान गया कि उसका भाई शिकार खेलने गया हुआ था। इसलिए सवेरा होते ही अपने घोड़े पर सवार होकर, कुत्ते को लेकर निकल पड़ा। कुछ देर बाद वह जादुगरनी की कुटिया के पास आया। कुटिया के बाहर पत्थरों के रूप में पड़े अपने भाई, घोड़े और कुत्ते को उसने पहिचान लिया।

वह कुटिया में गया। और बुढ़िया का गला जोर से पकड़कर उसने कहा—"अब बूढ़ी कहीं की, मेरे भाई को आदमी बना।"

"तुम्हारे कुत्ते को देखकर मुझे डर लग रहा है। उसे चाबुक से एक बार डराने दो। उसके बाद मैं तुम्हारे भाई को मनुष्य बना दूँगी।"

मकर ने अपने कुत्ते को बुढ़िया पर भगाया। उसने बुढ़िया को जोर से पकड़ लिया।

"तुम अपने कुत्ते को बुलाओ। मैं तुम्हारे भाई को आदमी बनाये देती हूँ।"

"बताओ क्या करना है, नहीं तो मेरा कुत्ता तुम्हें खा लेगा।" मकर ने कहा।

"मेरे पास दो चाबुक हैं। यदि हरी चाबुक से किसी को मारा गया, तो वह पत्थर बन जाता है। यदि लाल चाबुक से मारा गया, तो वह फिर जी उठता है।" बुढ़िया ने कहा।

मकर ने लाल चाबुक ली और उसे अपने भाई, उसके घोड़े और कुत्ते पर मारी। तीनों मामूली प्राणी हो गये।

मकर ने अपने कुत्ते से कहा- "इस चुड़ैल बुढ़िया को चीर फाड़ दे।" कुत्ते ने उस बुढ़िया को मार दिया।

दोनों भाई अपने घोड़ों पर सवार होकर, राजमहल आये। मकर को मन ही मन हँसता देख मित्र ने पूछा—"तुम क्यों यूँ मुस्करा रहे हो?"

"कुछ नहीं, तुम्हारे ससुर और पत्नी ने मुझे देखकर यह सोचा कि मैं तुम हूँ।" मकर ने कहा।

मित्र यह जान क्रुद्ध हो उठा। उसने गुस्से में मकर को अपनी तलवार से मार दिया। वह मकर के शव को रास्ते में छोड़कर राजमहल चला गया। उसकी पत्नी डरती डरती उसके पास आई। उसकी आँखें खूब लाल लाल थीं, जैसे बहुत देर से रो रही हो।

"क्यों रो रही हो?" उसने अपनी पत्नी से खिझकर पूछा।

"रोऊँ नहीं तो क्या करूं! कल आप आये और मेरी ओर तरेरते तरेरते बिना एक बात कहे, गुस्से में कहीं चले गये। तब से मैं रो ही रही हूँ।" राजकुमारी ने कहा।

मित्र जान गया कि मकर का व्यवहार बिल्कुल ठीक था। उस तरह के भाई को उसका ईर्ष्यावश मार देना उसे

बड़ा बुरा लगा। वह अपनी पत्नी को साथ लेकर मकर के शव के पास गया, मकर का घोड़ा और कुत्ता वहीं उसकी रखवाली कर रहे थे। मित्र ने जब उस शव पर लाल चाबुक मारा, तो मकर इस तरह उठा, जैसे सोकर उठा हो। उसने पूछा—"मुझे क्या हो गया है? क्या मैं घोड़े पर से गिर पड़ा था?"

"नहीं भाई! मैंने तुम्हें ईर्ष्या में मार दिया था, तुम्हारे साथ मैंने बड़ा अन्याय किया है। मुझे माफ़ करो।" मित्र ने कहा।

तीनों मिलकर फिर राजमहल गये।

अगले दिन सवेरे मित्र ने मकर से कहा—"तुम भी अगर शादी कर लो तो अच्छा है।"

"अच्छा, तो शादी कर लूँगा, पर मुझ से कौन शादी करने के लिए तैय्यार है?" मकर ने पूछा।

"तुम से शादी करने के लिए एक स्त्री तड़प रही है।" मित्र ने यह कहकर जगन्मोहिनी की बात बताई। उसे उसने उसके देश भेज दिया।

मकर को देखते ही जगन्मोहिनी ने कहा—"जब सब परीक्षायें पूरी हो गईं और मैं कल शादी करने की ही सोच रही थी, कि तुम कहाँ गायब हो गये थे?"

"मैं मित्र नहीं हूँ। मेरा नाम मकर है।" मकर ने कहा।

"मैं तुम्हें देखकर मुग्ध हुई थी, न कि तुम्हारे नाम पर।" जगन्मोहिनी ने कहा। उन दोनों का वैभव के साथ विवाह हुआ। सब सुख से रहने लगे।

पिशाचों की दोस्ती

आनन्द की पहाड़ के पास थोड़ी-सी जमीन थी। वह बड़ी उपजाऊ थी। काफी फसल होती थी, परन्तु वहाँ पिशाचों का डर था। सबने वहाँ पहरा देने से इनकार कर दिया।

"एक और एक और" इस टेक के साथ एक गाना सुनाई देता था। कभी कभी कुछ कुछ अस्पष्ट रूप से दिखाई भी देता था। ऐसी हालत हो गई कि वहाँ रात कोई न जाता और जमीन खराब होती गई।

आनन्द ने उस जमीन को किसी को बेचने की ठानी। गाँववाले सब जानते थे कि वहाँ पिशाच थे। इसलिए कोई बाहरवाला ही, जिसे यह न मालूम था, उसे खरीद सकता था। अगर कोई खरीदने आये, तो गाँववालों से उसने कहा कि वे उससे न कहें कि वहाँ पिशाच थे। चूँकि वह गाँव का बड़ा साहुकार था, इसलिए गाँववाले इसके लिए मान गये।

आखिर आनन्द की पहाड़ के पास की भूमि के लिए एक खरीदार आया। चन्द्रदास नाम का धनी दूर गाँव का रहनेवाला था। उसने अपने भाई से बँटवारा कर लिया था। उसके हिस्से में कोई एक लाख रुपया आया था। उस लाख से कहीं ज़मीन खरीदकर, वहाँ एक मकान बनवा लेना चाहता था वह। उसे आनन्द की ज़मीन जँची। खेती जाननेवाला उसमें सोना पैदा कर सकता था। चन्द्रदास ने जब पूछा कि ऐसी भूमि को क्यों छोड़ दिया गया था, तो आनन्द ने कहा—"गाँव से बहुत दूर है। जो खेत में ही

घर बनवाकर रहना चाहे उसके लिए, तो यह अच्छी ज़मीन है। पर दूर से आनेवाले के लिए, कुछ ऐसी वैसी ही है।"

चन्द्रदास ने उस ज़मीन को पचास हजार रुपये में खरीदा। वहाँ एक अच्छा घर बनवाया। अपनी पत्नी के साथ गृहप्रवेश किया। फिर उसने खेत में हल चलवाया और बीज भी डलवाये। चारों ओर की मेंढ़ भी ठीक करवाई। जब उसने रात को पहरा देने के लिए आदमी खोजे, उसे सारी बात मालूम हो गई।

"दिन में अगर काम करने के लिए कहोगे, तो हम करेंगे। अगर रात को पहरा देने के लिए कहोगे, तो हम नहीं कर सकते।" गाँववालों ने कह दिया। पहरा बहुत जरूरी था। जंगली जानवर खेत में आ सकते थे। वह धोखा खा गया था और उसका सारा रुपया खर्च हो गया था। झगड़ा करने से कोई फायदा न था। अपमान भी होता। इसलिए चन्द्रदास ने पिशाचों से लोहा लेने की सोची।

फसल पक रही थी। चन्द्रदास ने एक मचान बनवाया और खुद उस पर बैठकर पहरा देने लगा। आधी रात के समय तप तप की ध्वनि सुनाई दी। बाद में कुछ आकृतियाँ भी दिखाई दीं। चन्द्रदास ने देखा कि कोई सौ पिशाच कम्बल ओढ़कर अपने सरदार के चारों ओर नाच रहे थे। वे कुछ देर तक तो "एक और एक और" वाला गाना गाते रहे। फिर वे "अब बस है, चलो चलें" गाते, पहाड़ की ओर चले गये। फसल को कोई हानि न पहुँची।

चन्द्रदास ने हर रोज यही दृश्य देखा। शुरु में तो वह पिशाचों को देखकर घबराया। पर धीमे धीमे उसका डर जाता रहा।

एक दिन रात को, वह भी कम्बल ओढ़कर उनकी तरह उन्ही की आवाज में "एक और एक और" गाता पिशाचों के साथ नृत्य करने लगा।

पिशाचों के सरदार ने हर पिशाच को एक रत्नहार दिया। चन्द्रदास ने भी एक हार लिया। "अब बस है चलो चलें।" उसने भी और पिशाचों के साथ गाया। पिशाच सब चले गये और चन्द्रदास अपने पलंग पर चला गया।

चन्द्रदास ने अपना हार देखा, उसमें सौ रत्न थे। उसमें से एक रत्न लेकर, जब उसने शहर में बेचा तो उसको दस हजार रुपये मिले। चन्द्रदास बड़ा खुश हुआ और अपने घर चला आया।

जब चन्द्रदास की पत्नी ने अपने पति को इतना खुश यकायक देखा, तो उससे उसने खुशी का कारण पूछा। उसने अपनी पत्नी को सब कुछ बता दिया। "इन पिशाचों के कारण न हमें कोई नुक्सान है, न फसल को ही। रात के समय जंगली जानवर भी नहीं आते। पहरा देना फिजूल है।" उसने कहा।

"क्यों नहीं इस तरह के तीन और हार ले आते?" पत्नी ने कहा।

"नहीं, नहीं, इसी एक हार से कई पीढ़ियों तक लोग मजे में रह सकते हैं। यही नहीं पिशाचों से दोस्ती करना अच्छा नहीं है। तुम यह किसी से न कहना।" चन्द्रदास ने अपनी पत्नी से कहा।

पर चन्द्रदास की पत्नी के लिए इतना बड़ा रहस्य पचा लेना सम्भव न था। उसने यह बात अपनी नौकरानी से कही। उसको चकित पा वह और भी खुश हुई। "अरे यह बात किसी और से न कहना। समझी।"

नौकरानी आनन्द के घर गई। "शायद आप यह सोच खुश हैं कि भूतोंवाली ज़मीन आपने अच्छे दाम पर बेच दी है। जिन्होंने उसे खरीदा है, उन्होंने पिशाचों से रत्नहार पाया है, इस तरह सौ गुना लाभ पाया है।" जो कुछ उसकी मालकिन ने बताया था वह सब उसने आनन्द की पत्नी से कहा।

आनन्द की पत्नी ने यही बात अपने पति से कह दी।

"अरे....अरे....कितनी गलती हो गई है। अगर ऐसा ही होना था, तो मैं अपनी ज़मीन बेचता ही न।" आनन्द ने कहा। उसे चन्द्रदास पर ईर्ष्या होने लगी। उसने चन्द्रदास के पास जाकर पूछा—"ज़मीन कैसी है? फसल अच्छी है न?"

"आपकी दुआ से ठीक ही है।" चन्द्रदास ने कहा।

गाँव में अफ़वाह उड़ी है कि इस तरफ़ पिशाच हैं। कोई रात में पहरे पर नहीं आना चाहता। कहीं तुम्हें तो कोई दिक्कत नहीं है? आनन्द ने कहा।

"न पिशाच हैं, न भूत हैं। मैंने खेत के पहरे के लिए इन्तज़ाम भी नहीं किया है। फसल भी बढ़िया है।" चन्द्रदास ने कहा।

आनन्द ने सोचा कि चन्द्रदास सच छुपा रहा था। जो उसने सुना था, वह अवश्य सच ही होगा। चन्द्रदास के घर में लक्ष्मी नृत्य करती-सी लगती थी। खेत भी चमचमा रहा था। उसमें मचान भी था। अगर पहरा ही न था, तो मचान क्यों बनवाया गया था? क्योंकि और नहीं आ रहे हैं, इसलिए चन्द्रदास स्वयं पहरा दे रहा होगा, पिशाचों को धोखा देकर उनसे रत्नहार ले लिया होगा।

यह देख आनन्द ने भी पिशाचों से एक रत्नहार लेने की सोची।

उस दिन रात को वह कम्बल ओढ़कर खेत में आया। मचान पर कोई पहरे पर न था। सब शान्त था। आधी रात के समय पिशाच आये। उन्होंने नृत्य किया, गाया। अपने सरदार से उन्होंने रत्नहार भी ईनाम में पाया। आनन्द ने भी उनके साथ गाकर, नाचकर, रत्नहार ईनाम में पाया। उसके आनन्द की सीमा न थी।

वह धीमे से पिशाचों के बीच में से खिसक गया। यह देख कुछ पिशाच चिल्लाये "चोर, चोर, उसे पकड़ो।" आनन्द उनके द्वारा पकड़ लिया गया।

पिछली बार जब उनका एक हार चला गया था, तब से पिशाच चोर की तलाश कर रहे थे। इसी कारण वे आनन्द को पकड़ पाये थे।

पिशाचों ने आनन्द से हार ले लिया। उसके दाहिने हाथ पर एक चोट मारकर वे अपने रास्ते चले गये।

अगले दिन चन्द्रदास ने खेत में आनन्द को बेहोश पड़ा देखा तो उसको उठाकर वह घर में ले गया। गाँव से वैद्य को बुलवाया और उसकी चिकित्सा करवाई।

"क्या हुआ, तुम हमारे खेत में रात के समय क्यों आये?" जब चन्द्रदास ने पूछा तो आनन्द ने झूट कहा कि वह कुछ न जानता था।

जब कुछ ताकत आई, तो आनन्द अपने घर चला गया, पर उसका हाथ हमेशा के लिए बेकाम हो गया था।

राम के अद्भुत यज्ञ के लिए वाल्मीकी अपने शिष्यों के साथ आये। ऋषि वाटिका में उनको एक विशेष कुटी में टिकाया गया। उन्होंने अपने शिष्यों को, जहाँ चाहे, वहाँ अपने रामायण के गायन की अनुमति दी।

उन्होंने कुश लव से कहा—"यदि तुम से कोई पूछे कि किसके लड़के हो, तो कहना कि तुम वाल्मीकी के शिष्य हो। कोई धन दे, तो न लो। राम यदि बुलायें, तो उनके समक्ष भी रामायण का गायन करो। राजा हैं, इसलिए उनका मान करना।" वे "अच्छा बाबा" कहकर कुटिया से चले गये।

यह जानकर कि वे संगीत की उपयुक्त विधि में रामायण का पाठ कर रहे थे, राम ने उनको एक बड़ी सभा में बुलवाया और उनसे गाने के लिए कहा। उस सभा में मुनि, राजा, पंडित, पौराणिक संगीत वेत्ता, कलाकर, नाट्य विद्वान कितने ही थे। उस दिन कुश लव ने रामायण के पहिले बीस सर्ग ही सुनाये। राम ने लक्ष्मण से कहा—"बच्चों को अट्ठारह हज़ार सुवर्ण मुद्रायें दिलवाओ।" पर जब लक्ष्मण ने उनको अलग अलग सोना देना

चाहा, तो उन्होंने कहा—"हमें सोने से क्या मतलब? हम जंगल में कन्द-मूल खाकर जीनेवाले हैं।"

राम को यह सुन बड़ा आश्चर्य हुआ। "जो, तुम यह काव्य सुना रहे हो, वह कितना बड़ा है? उसे किसने लिखा है?"

"इसे वाल्मीकी महामुनि ने लिखा है। वे भी इस यज्ञ के लिए आये हुए हैं। अगर आप सुनना चाहें, तो रोज हम इसका गायन करेंगे।" सीता के लड़कों ने सविनय कहा।

राम मान गये। बच्चे रोज आते और सब के सामने कुछ सर्गों का गायन करते. इस प्रकार कई दिन तक रामायण का पाठ चलता रहा। इस गायन से सब जान गये कि वे सीता के लड़के थे।

राम ने अपने दूतों को बुलाकर कहा—"तुम वाल्मीकी के पास जाओ। यदि सीता पवित्र है, तो यह सत्य निरूपित करने के लिए महामुनि की हम अनुमति चाहते हैं। यह उनसे कहना।"

दूतों ने आकर, जब राम की इच्छा के बारे में कहा, वाल्मीकी महामुनि ने कहा—"सीता राम की इच्छा के अनुसार यहाँ आकर शपथ करेगी।"

दूतों के यह बताते ही राम ने सभासदों के समक्ष घोषित किया कि सीता अपनी पवित्रता की शपथ करने जा रही है। सबने यह सुनकर, राम का अभिनन्दन किया।

अगले दिन राम यज्ञ वाटिका में गये और उन्होंने सब महामुनियों को बुलवाया। राक्षस, वानर और भिन्न भिन्न देशों से आये हुए, चारों जातियों के लोगों को बुलवाया।

सबके उपस्थित होने पर, वाल्मीकी महामुनि सीता अपने साथ लाये। वाल्मीकी के पीछे सीता को आते देख, सबके दिल थरथर करने लगे।

वाल्मीकी ने राम से कहा—"राम, यह सीता परम पवित्र है। कभी इसने धर्म का उलंघन नहीं किया है। बदनामी के डर से तुमने इसको मेरे आश्रम के पास छोड़ दिया। इसलिए वह ऐसा शपथ कर रही है, जिससे तुम्हें उस पर विश्वास हो। ये दोनों लड़के सीता के हैं। मैंने कभी झूट नहीं बोला है। मैं कहता हूँ, ये तुम्हारे लड़के हैं। मैंने बहुत तपस्या की है। यदि सीता सचमुच अपवित्र हो, तो मेरी तपस्या का मुझे फल न मिले। तुम निन्दा से डर गये थे। पर तुम जानते हो कि उसमें कोई दोष नहीं है।"

राम ने वाल्मीकी को नमस्कार करके कहा—"मुनीश्वर! आपने जो कहा है, वह सच है। लंका में ही अग्नि ने सीता की पवित्रता का समर्थन किया था। इसलिए ही मैं उसको अपने साथ ले आया था। मैं भी जानता हूँ कि ये बच्चे मेरे बच्चे हैं। इस महासभा में, यदि सीता ने अपनी पवित्रता सिद्ध कर दी, तो मैं सन्तोषपूर्वक उसके साथ रहूँगा।"

सीता ने काषाय वस्त्र पहिने हुए थे। उसने भूमि की ओर देखते हुए कहा—"यदि मैं राम के सिवाय, किसी और का स्मरण न किया हो, तो भूमि तुम मुझे अपने में समालो। यदि मैं मनसा वाचा राम की पूजा करती हूँ, तो भूमि तुम मुझे अपने में सभालो। राम के सिवाय यदि किसी और को मैं नहीं जानती हूँ, तो भूमि तुम मुझे अपने में समालो।"

सीता अभी यह कह रही थी कि बलवान नागकुमार, एक दिव्य सिंहासन को उठाकर भूमि से निकल आये। सिंहासन बड़ा विचित्र था। नागकुमार के सिरों के रत्न चमक रहे थे। उस सिंहासन पर से

भूदेवी ने अपने दोनों हाथ फैलाये और सीता को उठाकर सिंहासन पर बिठा लिया। सिंहासन पाताल में चला गया।

यह देख सब बड़े चकित हुए। कई तो सीता को ही देखते रहे। कुछ राम की ओर देखते रहे। फिर हो हल्ला मचा। वानर रोये धोये। सबने प्रशंसा की। "कितनी पवित्र है!" मुनियों ने कहा।

राम सिर झुकाकर, बहुत देर तक आँसू बहाते रहे। "मैंने इतना कष्ट कभी नहीं उठाया है। ओ भूदेवी, मेरी सीता मुझे वापिस कर दो। नहीं, तो मुझे भी उसके ले जाओ। कौन है वहाँ साथ मेरे धनुष बाण लाओ, मैं इस भूमि को फोड़ देता हूँ।" सबने समीप आकर, उसको आश्वासन दिया।

वाल्मीकी कुश लव को लेकर, अपनी पर्णशाला में गये। सीता को याद करते करते उन्होंने वह रात काट दी।

अगले दिन जब फिर सभा हुई, तो कुश लव ने उत्तर रामायण का पाठ किया। उसके साथ यज्ञ समाप्त हुआ। यज्ञ के लिए निमन्त्रित अतिथियों का उचित आदर सत्कार करके, राम फिर अयोध्या वापिस चले आये। वे अपने साथ अपने लड़कों को भी लेते आये। उन्होंने फिर किसी स्त्री से विवाह न किया।

सीता की सोने की प्रतिमा को साथ रखकर उन्होंने कई अश्वमेध, वाजपेय यज्ञ किये। उन्होंने धर्म का परिपालन करते, न्याय का निर्वहण किया और प्रजा का आदर पाया। उनके शासन में देश में समृद्धि थी। अकाल मरण नहीं होते थे।

कालक्रम से कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी मर गये। राम ने उनकी उत्तर क्रियायें कीं और बहुत-सा दान किया।

कुछ समय बाद, कैकेयी के भाई युधाचित्त के पास से गार्ग्य दस हज़ार घोड़े उपहार में लाया। "राम, तुम्हारे मामा ने तुम से इस प्रकार कहने के लिए कहा है। सिन्धु नदी के तट के दोनों भाग जिसे गन्धर्व देश कहा जाता है, बहुत ही सुन्दर है। वहाँ शैलूष के वंश के तीन करोड़ गन्धर्व हैं। वे बड़े बलवान हैं। तुम उनको जीत कर गन्धर्व देश को अपने वश में कर लो। मैं तुम्हारे हित की बात कर रहा हूँ।"

"अच्छा, ये भरत के लड़के हैं। नाम तक्ष और पुष्कल है। इनके साथ भरत और सेना को भेजूँगा। भरत गन्धर्व को जीतेगा और उसे दो भागों में बाँटकर, अपने दोनों लड़कों को उनका राजा बनाकर वापिस चला आयेगा।" राम ने कहा।

तदनुसार भरत बड़ी सेना को साथ लेकर पन्द्रह रोज यात्रा करके, केकेय देश पहुँचा और वहाँ वह युधाचित से मिला। फिर दोनों मिलकर गन्धर्व देश पर आक्रमण करने गये। युद्ध में गन्धर्व मारे गये। भरत ने उनके देश को जीत लिया। तक्ष को तक्षशिला नामक नगर और पुष्कल को पुष्कलावती नगर देकर, उन नगरों में पाँच वर्ष रहकर, वह अयोध्या वापिस चला गया।

अब लक्ष्मण के लड़के अंगद और चन्द्रकेतु के लिए राज्यों की व्यवस्था करनी थी। राम ने लक्ष्मण से पूछा—"क्या कोई ऐसा देश है, जिस पर वे राज्य कर सकते हैं।" लक्ष्मण ने बताया कि कारुमथ देश एक ऐसा था। यदि उसे अंगद को दे दिया गया और चन्द्रकान्त देश को, चन्द्रकेतु को दे दिया गया, तो अच्छा होगा। अंगद के साथ लक्ष्मण

कहा—"राम! एकान्त में कुछ बात करनी है। हमारे बात करते समय यदि कोई आये, तो तुम्हे उसे मरण दण्ड देना होगा। यदि तुम यह मानते हो, तो मैं जिस काम पर आया हूँ, उसके बारे में बताऊँगा।"

राम मान गये। लक्ष्मण को बुलाकर उन्होंने कहा—"लक्ष्मण, द्वारपालक को भेज दो और तुम ही द्वार पर रहो। जब हम बात कर रहे हों, उस समय अगर कोई भी आया, तो उसको मरण दण्ड दिया जायेगा।"
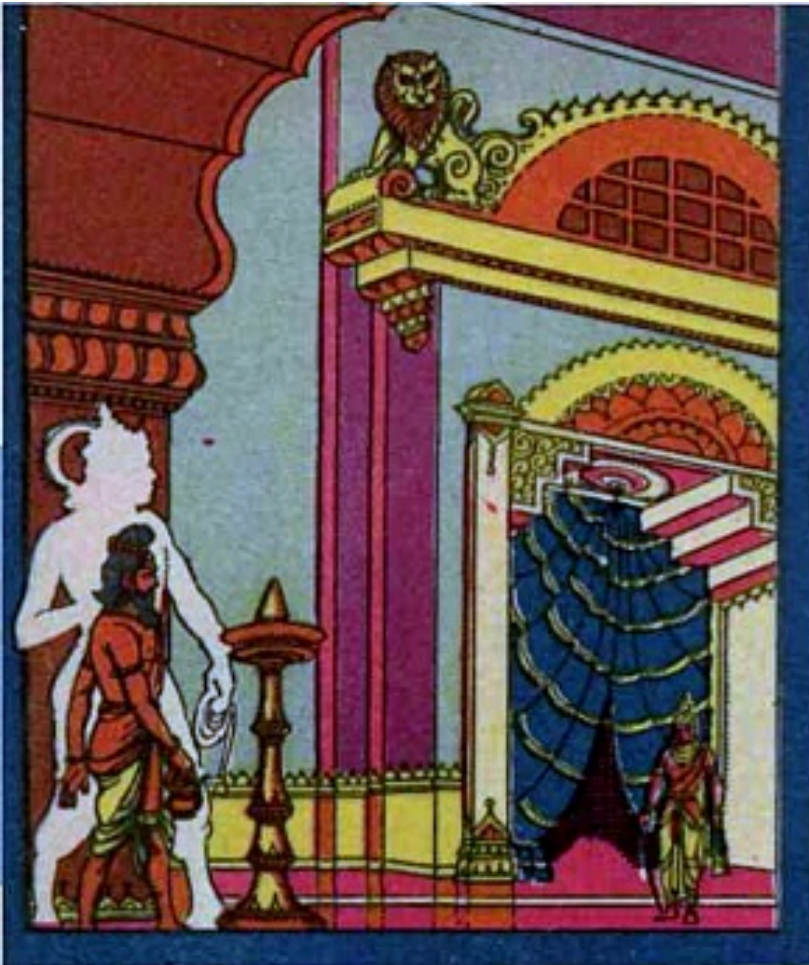
और चन्द्रकेतु के साथ भरत गये और उनको वे वे राज्य दिलवाकर, वे अयोध्या वापिस चले आये।

समय बीतता गया। एक दिन यम मुनि के वेष में, राम के महल में आया। लक्ष्मण को देखकर उसने कहा—"लक्ष्मण, मैं एक बड़े महर्षि का दूत हूँ और राम को किसी काम पर देखने आया हूँ।"

राम ने यह सुनते ही, उस मुनि को अन्दर आने के लिए कहा। यम अन्दर गया। राम के दिये हुए अर्घ्य आदि स्वीकार करके, आसन पर बैठकर उसने

तब यम ने राम से कहा—"राम, मैं कपट वेष में यम हूँ। मुझे ब्रह्मा ने भेजा है। ब्रह्मा ने तुमसे यूँ कहने के लिए कहा है। "तुम रावण के संहार के लिए अवतरित विष्णु हो। तुम जिस काम के लिए भूलोक में आये थे, वह समाप्त हो गया है। अब तुम वापिस जाना चाहो, तो चले आओ।"

राम ने हँसकर कहा—"तुम्हारे आगमन से मैं बहुत सन्तुष्ट हूँ। मैं भी जहाँ से आया था, वहाँ जाने के लिए तैयार हूँ।"

जब राम, यम से इस प्रकार कह रहे थे, तो दुर्वासा आये। उन्होंने कहा—"लक्ष्मण, मुझे अभी राम को देखना है।"

"स्वामी! भाई किसी और काम में निमग्न है। ज़रा ठहरिये। आप किस काम पर आये हैं? मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?" लक्ष्मण ने कहा।

दुर्वासा ने क्रुद्ध होकर कहा—"यदि तुम मुझे तुरत राम के पास न ले गये, तो शाप देकर, मैं तुम्हारे वंश को निर्मूल कर दूँगा।" यह सोचकर कि उसको अकेला मरना स्वीकार था, पर सारे वंश का नष्ट हो जाना उसे गँवारा न था। लक्ष्मण ने अन्दर जाकर, राम को बुलवाया।

राम उठकर आये। दुर्वासा को नमस्कार करके उन्होंने पूछा—"स्वामी, क्या आज्ञा है?"

"मुझे तुरत भोजन दिलवाओ।" दुर्वासा ने कहा। राम ने उनको भोजन दिलवाया। दुर्वासा भोजन करके, सन्तुष्ट होकर चले गये।

राम को अपनी आज्ञा याद आयी। लक्ष्मण ने उनके पास आकर कहा—"भाई, मेरे विषय में दुःखी न होओ। मुझे मारकर, अपने वचन की रक्षा करो।"

राम ने अपने मन्त्री, पुरोहित आदि को बुलवाया। जो कुछ हुआ था, उन्हें सुनाया। उनकी उन्होंने सलाह माँगी।

"राम, लक्ष्मण को छोड़ दो। त्याग बध के समान है। धर्म भंग न होने पाये।" वशिष्ठ ने कहा।

लक्ष्मण ने राम को नमस्कार किया। वह घर भी न गया। सीधे सरयू नदी के तट पर गया। श्वास रोककर, योग करने लगा। इन्द्र विमान में अदृश्य होकर, नीचे

आया और लक्ष्मण को सदेह स्वर्ग ले गया। विष्णु का चौथा भाग यूँ वापिस आ गया।

फिर राम ने सभा बुलाकर कहा—"मैं भी लक्ष्मण की तरह चला जाऊँगा। भरत के पट्टाभिषेक की व्यवस्था कीजिये।" यह सुन, भरत निश्चेष्ट हो गया। उसने कहा—"मैं वह राज्य लेकर क्या करूँगा, जिसमें तुम नहीं हो। कुश लव का पट्टाभिषेक करो। कोशल का कुश को राजा बनाओ और उत्तर कोशल का, लव को राजा बनाओ और शत्रुघ्न को खबर भिजवा दो कि हम स्वर्ग जा रहे हैं।"

भरत के परामर्श के अनुसार कुश लव का पट्टाभिषेक किया गया। शत्रुघ्न के लिए मधुरापुर दूत भेजा गया। वह भी अपना राज्य, अपने लड़के सुबाहु और शत्रुघाती को देकर, अयोध्या चला आया।

यह सुनकर कि राम स्वर्ग जा रहे थे, सुग्रीव और विभीषण अपने लोग बाग के साथ भागे भागे आये। सुग्रीव, अंगद का पट्टाभिषेक करके आया।

फिर राम का प्रस्थान प्रारम्भ हुआ। राम ने पतले वस्त्र पहिने। हाथ में दूब ली। चुपचाप चलने लगे। उसके साथ अन्तःपुर की स्त्रियाँ, भरत, शत्रुघ्न, मन्त्री, नौकर चाकर, वानर वगैरह निकले। कुछ दूर चलकर राम सरयू नदी के तट पर पहुँचे। राम ने उस नदी में पैर रखे। उन्हें ब्रह्मा की पुकार सुनाई पड़ी। राम, भरत, शत्रुघ्न को, वैष्णव शरीर मिल गये। उनके साथ, जिन जिन का अवतरण हुआ था, वे वे अपने अपने लोकों में चले गये। उनके भौतिक देह सरयू नदी में रह गये।

अरण्य पुराण

[३]

अकेला के प्रश्न का उत्तर किसी ने न दिया। भेड़ियानी ने सोचा कि झगड़ा होकर रहेगा, वह इसके लिए तैयार हो गई। इतने में एक भालू ने पिछले पैरों पर खड़े होकर, गला साफ किया। भेड़िये के बच्चों को, यह भालू ही जंगल के कानूनों के बारे में बताता था। वह चूँकि कन्द, मूल, फल और शहद आदि खाता था, वह जब चाहे, तब सभा में आ जा सकता था।

"मनुष्य का बच्चा! मैं मनुष्य के बच्चे की सिफ़ारिश करता हूँ। उसे झुण्ड में घूमने फिरने दो। वह मेरा शिष्य बनकर रहेगा।" भालू ने कहा—"भालू ने सिफ़ारिश की है। वह हमारे बच्चों का गुरु है और किसकी क्या फ़िक्र है!" अकेला ने कहा।

इतने में बघेल की छाया उस चक्कर में पड़ी। सब उसे जानते थे। चालाकी और चुस्ती में वह किसी से कम न था। वह बड़ा साहसी था और घायल हाथी की तरह भयंकर भी हो सकता था।

"अकेला! स्वतन्त्र लोगों की इस सभा में मेरा कोई स्थान नहीं है। परन्तु जंगल के कानून के मुताबिक यदि एक बच्चे को लेकर कोई सन्देह हो, तो उसको खरीदा जा सकता है। परन्तु कौन खरीद सकता है, यह साफ़ साफ़ नहीं लिखा है। मैं सच कह रहा हूँ न!" बघेल ने पूछा।

"हाँ, कोई भी खरीद सकता है।" कई युवकों ने जवाब दिया।

"निसहाय बचे को मारना अन्याय है। यही नहीं, बड़े होने पर शिकार में वह तुम्हारी मदद कर सकता है। भालू ने इसकी सिफ़ारिश की है। मैं तुमको एक अच्छा मोटा बैल दूँगा। यहाँ से आधे मील की दूरी पर मैंने अभी उसे मारा है। वह लेकर तुम इस मनुष्य के बचे को स्वीकार करो। क्या यह सम्भव नहीं है?" बघेल ने पूछा।

अरे इसमें जाता ही क्या है! लड़का सरदियों की बारिश में मर मरा जायेगा! नहीं तो गरमी में झुलस जायेगा। इससे क्या बनने बिगड़नेवाला है। कहाँ है बैल? आओ उसे ले लें।"

"अच्छी तरह देख लो भेड़ियो। अच्छी तरह देख लो।" अकेला ने सावधान किया।

मौवली कँकड़ों से खेलने में इतना मस्त था कि उसने भेड़ियों का उसको ध्यान से देखा जाना, देखा ही नहीं। भेड़िये मरे बैल के लिए, पहाड़ से उतरकर चले गये। आखिर अकेला, बघेल, भालू और मौवली और उसके सम्बन्धी भेड़िया ही वहाँ रह गये। शेर खान का गर्ज़न सुनाई देता जाता था। उसे यह देख बड़ा गुस्सा आ रहा था कि भेड़ियों ने मौवली को उसे न दिया था।

"गरजता रहा, कभी यह बचा तुम से एक और तरह गरजवायेगा। बघेल ने कहा।

"अच्छा फैसला हुआ। मनुष्य और उनके बचे ज्ञानवाले हैं। इसके कारण कभी हमारा फायदा अवश्य होगा।" अकेला ने कहा।

"जब ज़रूरत पड़ेगी, तो काफ़ी फ़ायदा होगा। कोई भी तो हमेशा के लिए झुण्ड का नेता नहीं हो सकता।" बघेल ने कहा।

अकेला कुछ न बोला। हर झुण्ड के सरदार का समय आता है। वह कमजोर हो जाता है। उसको तब भेड़िये मार देते हैं। नया सरदार आता है। फिर वह भी कालक्रम से मार दिया जाता है। उस समय के बारे में अकेला ने सोचा। फिर उसने कहा—"भालू इसे ले जाओ। इसे ऐसी शिक्षा दो, जो स्वतन्त्र प्राणियों के अनुकूल हो।"

इस प्रकार मौवली भेड़ियों के झुण्ड में आया। इसके लिए भालू की सिफ़ारिश और बघेल की एक बैल की रिश्वत काम में आई।

* * *

दस बारह वर्ष गुज़र गये। मौवली ने यह समय कैसे काटा, क्या क्या आश्चर्य हुए, इसका अनुमान ही किया जा सकता है। वर्णन नहीं किया जा सकता। वह भेड़िये के बच्चों के साथ बड़ा हुआ। पर वह अभी बच्चा ही था कि भेड़िये के बच्चे बढ़ गये। उसने भेड़िये से सब विद्यायें सीखीं। जंगल की सब चीज़ों के बारे में वह जान गया। जब कभी कहीं घास हिलती, रात में हवा चलती, ऊपर अगर

कोई उल्लू चिल्लाता और अगर कोई चमगादड़ किसी पेड़ को खरोंचता, तो उसका क्या अर्थ था वह जानता था।

जब वह कुछ सीख-साख न रहा होता, तो धूप में पड़ा सो जाता। खाना खाता और फिर सो जाता। कभी शरीर गन्दा लगता, या गरमी लगती, तो जंगल के पोखरों में नहाता। शहद चाहता, तो पेड़ों से उठा लाता। बघेल ने उसे पेड़ों पर चढ़ना सिखा दिया था। बघेल एक शाखा पर चढ़ जाता और उसे बुलाता—"आ भाई।" मौवली पहिले टहनी न

छोड़ता, पर बाद में बन्दरों की तरह एक टहनी से दूसरी टहनी पर कूदने लगा।

पहाड़ी पर जब झुण्ड की सभा होती, तो मौवली भी उसमें शामिल होता। उसने उस समय एक बात देखी। वह जब कभी एक भेड़िये की ओर ध्यान से देखता, तो उसकी नजरें झुक जातीं। इसलिए भेड़ियों को तंग करने के लिए वह लगातार उनकी ओर देखा करता। कभी कभी वह भेड़ियों के पैरों में जो काँटे चुभ जाते, उन्हें निकालता।

रात के समय मौवली पहाड़ से उतरकर, नीचे खेतों में चला जाता और वहाँ झोपड़ियों में रहनेवाले लोगों को अचरज से देखता। परन्तु उसे मनुष्यों के बारे में बड़ा सन्देह था। एक दिन बघेल ने एक कटघरा दिखाया। वह बड़ी चालाकी से जंगल में रखा गया था। सन्दूक की तरह था। मौवली उसमें शायद घुस भी जाता, यदि बघेल उसे सावधान न कर देता।

रात हो जाने के बाद वह घने जंगल में बघेल के साथ शिकार करने जाता और दिन भर सोता। रात को बघेल को शिकार करता देख, उसे बड़ी खुशी होती। बघेल जब भूखा होता, तो अन्धाधुन्ध पशुओं को मार देता। मौवली भी उसी तरह मारता। परन्तु बघेल ने उससे एक बात कही—"एक बैल के कारण तुम्हें तुम्हारे झुण्ड ने खरीदा है। इसलिए उसे न मारा करो। यह सारा जंगल तेरा है जिसे तुम मार सको मारो। परन्तु किसी बड़ी उम्र की पशु को न मारो, न खाओ। यह जंगल का कानून है।" बघेल की इस बात का मौवली ने कभी उलंघन न किया।

५७. काम्बोडिया के रजतबौद्धालय

काम्बोडिया की राजधानी फ्नोमपेन्ह में यह मन्दिर है। इसके फर्श पर ५,००० चान्दी के चादरें लगी हैं। बुद्ध की मूर्ति पर, जो गिलास की अलमारी में है १९० पाऊन्ड सोना लगा।